॥ ओ३म् ॥

दयानन्दसन्देश

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट का मासिक पत्र

Date of Printing = 05-09-21
प्रकाशन दिनांक = 05-09-21

सितम्बर २०२१

वर्ष ५० : अँक ११
दयानन्दाब्द : १९७
विक्रम-संवत् : भाद्रपद-आश्विन २०७८
सृष्टि-संवत् : १,९६,०८,५३,१२२

संस्थापक : स्व० ला० दीपचन्द आर्य
प्रकाशक व सम्पादक : धर्मपाल आर्य
व्यवस्थापक : विवेक गुप्ता

कार्यालय :

दयानन्दसन्देश (मासिक)
४२७, मन्दिर वाली गली, नया बांस,
खारी बावली, दिल्ली-६
दूरभाष : २३९८५५४५, ४३७८११९१
चलभाष : ९६५०५२२७७८
E-mail : aspt.india@gmail.com

कुल पृष्ठ २८
एक प्रति १५.०० रु०

वार्षिक शुल्क १५०) रुपये
पंचवर्षीय शुल्क ५००) रुपये
आजीवन शुल्क ११००) रुपये
विदेश में ५०००) रुपये

इस अंक में

वेदोपदेश	२
ईशनिंदा का ठेकेदार बना पाकिस्तान	४
वेदोत्पत्ति पर वेद का कथन	६
काबुल में तालिबानद्वअब आगे क्या.....	९
हादसों पर हादसे हैं ?	१२
पृथिवी सहित समस्त जड़-चेतन जगत्.....	१५
स्टेशन मास्टर लाला गंगाराम	१९
आर्यावर्त्त की सीमा	२२
साहित्य समीक्षा	२६

विशेष : दयानन्द सन्देश में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं। उनसे सम्पादक की पूर्णतया सहमति आवश्यक नहीं है। अतः किसी भी चर्चा/परिचर्चा एवं वाद-विवाद के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी होंगे।

सत्यार्थप्रकाश

प्रचार संस्करण : ३००० रुपये सैकड़ा
स्पेशल (सजिल्द) : ५००० रुपये सैकड़ा में प्राप्त करें।

॥ ओ३म् ॥

वेद सब सत्यविद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है। —महर्षि दयानन्द

वेदोपदेश—न दुष्टुतिर्द्रविणोदेषु शस्यते न स्रेधन्तं रयिर्नशत् । सुशक्तिरिन्मघवं तुभ्य मावते देष्णं यत्पार्यं दिवि ॥

—सा० ४।४३।२ (८६८)

शब्दार्थ—दुष्टुतिः= बुरी कीर्त्तिवाला, दुष्ट साधनों वाला, **द्रविणोदेषु**=धनदाताओं में **न**=नहीं **शस्यते**=गिना जाता । **स्रेधन्तम्**=हिंसक को **रयिः**=धन, मोक्षधन, **न**=नहीं **नशत्**=प्राप्त होता । हे **मघवन्**=पूजनीय धनवन् भगवन् ! **मावते**=मेरे जैसे के लिए **पार्ये**=पार पाने योग्य **दिवि**=प्रकाशावस्था में **देष्णम्**=देने योग्य **यत्**=जो धन है, **सुशक्तिः**=उत्तम शक्तिवाला मनुष्य **इत्**=ही **तुभ्यम्**=तेरे निमित्त [उसको प्राप्त करता है] ।

व्याख्या—इस मन्त्र में जिस धन की चर्चा है, वह साधारण धन=धन-धान्य, मकान, पशु आदि नहीं, वरन् शान्तिरूप धन है । वेद में कहा भी है—

शं पदं मघं रयीषिणे— साम० ४४१।

धनाभिलाषी के लिए शान्तिरूपी धन ही पद=प्राप्त करने योग्य है । लौकिक धन-धान्य तो चोर-डाकुओं के पास भी होता है । वैसे भी, धन की अधिक मात्रा प्रायः अन्याय, अत्याचार, अनाचार से ही कमाई जाती है, किन्तु इस धन से बुद्धिमानों की तृप्ति नहीं होती । याज्ञवल्क्य जब घर छोड़कर संन्यासी बनने लगे, तो उन्होंने धर्मपत्नी मैत्रेयी से कहा—आ मैत्रेयी ! तेरा बटवारा कर दें । इस पर मैत्रेयी ने पूछा—

यन्नु म इयं भगोः सर्वा पृथिवी वित्तेन पूर्णा स्यात् । स्यान्नवहं तेनामृता ।

—बृहदा० ४।५।३

भगवन् ! धन-धान्य से पूर्ण यदि यह सम्पूर्ण पृथिवी मेरी हो जाए तो क्या मैं अमृत हो जाऊँगी ?

सत्यदर्शी यथार्थवक्ता याज्ञवल्क्य उत्तर देते हैं—

नेति नेति....यथैवोपकरणावतां जीवितं तथैव ते जीवितं स्याद्, अमृतत्वस्य नाशास्ति वित्तेन । —बृहदा० ४।५।३

नहीं, नहीं....जैसे धन-धान्य सामान वालों का जीवन होता है, वैसे ही तेरा जीवन भी होगा। अमृतत्व की=मुक्ति की आशा=सम्भावना धन से नहीं हो सकती ।

इस पर मैत्रेयी ने कहा—

येनाहं नामृता स्यां किमहं तेन कुर्यां यदेव भगवान् वेद तदेव मे ब्रूहि ।

—बृहदा० ४।५।४

जिससे मैं मुक्त न हो सकूँ, उससे मेरा क्या प्रयोजन? महाराज ! मोक्ष का जो भी साधन आप जानते हैं, वही मुझे बताइए ।

धन के प्रति कितनी ग्लानि है ! कितना गहरा निर्वेद है ! सचमुच मोक्षाभिलाषी, शान्ति की कामनावाला इस चञ्चल धन को कैसे चाहेगा, जिसके सम्बन्ध में वेद स्वयं कहता है—

ओ हि वर्तन्ते रथ्येव चक्रान्यमन्यमुप तिष्ठन्त रायः ॥ —ऋ० १०।११७।५॥

अरे धन तो सचमुच एक से दूसरे के पास जोते हुए रथ के चक्रों की भाँति अदलते-बदलते रहते हैं। ऐसे विनश्वर भौतिक धन में अविनाशी के अभिलाषी की अभिलाषा कैसी !!! इसीलिए प्रकृत मन्त्र में कहा है–

न दुष्टुतिर्द्रविणोदेषु शस्यते ।

दुष्ट साधनों वाला मनुष्य धनदाताओं में नहीं गिना जाता। जब उसके पास है ही नहीं, तब देगा कहाँ से ? वेद पाने की बात न कहकर देने की बात कहता है, क्योंकि वेद दान की महत्ता का प्रचारक है। ऋग्वेद ने तो स्पष्ट कह दिया–

न दुष्टुती मर्त्यो विन्दते वसु ।

–ऋ० ७।३२।२१॥

मनुष्य दुष्ट उपायों से धन प्राप्त नहीं कर सकता।

दूसरे चरण में बहुत स्पष्ट कहा है–

न स्रेधन्तं रयिर्नशत्–हिंसक भी धन नहीं प्राप्त कर सकता।

कितना ही शास्त्रवेत्त क्यों न हो, जब तक हिंसादि दुष्ट उपायों को नहीं छोड़ता, तब तक शान्ति-धन, आत्म सम्पत्ति को नहीं प्राप्त कर सकता। यम ने मार्मिक शब्दों में नचिकेता को समझाया था–

नाविरतो दुश्चरितान्नाशान्तो नासमाहितः।
नाशान्तमानसो वापि प्रज्ञानेनैनमाप्नुयात् ॥

–कठो० २।२४

जो दुराचार से नहीं हटा, जो चञ्चल है, जो प्रमादी है, सावधान नहीं है, जिसके मन में क्षोभ है, वह बुद्धि से, ज्ञान से इस आत्मा को नहीं प्राप्त कर सकता।

आत्मज्ञान के बिना शान्ति नहीं। जब प्रमाद तथा अनाचार से आत्मा की प्राप्ति नहीं हो सकती तब उसकी प्राप्ति के बाद प्राप्त होने वाली शान्ति-सम्पत्ति की प्राप्ति की आशा कैसे की जा सकती है ?

वेद कहता है, देने योग्य धन को कोई शक्तिशाली ही प्रभु समर्पण की भावना से प्राप्त कर सकता है। बलहीन का संसार में ही ठिकाना नहीं परलोक की तो बात ही क्या ? वहाँ के लिए उपयुक्त धन कमाने को बड़ा बल चाहिए। ●

मनुष्य स्वभाविक रूप से शाकाहारी है

प्रसिद्ध वैज्ञानिक डॉ० स्वामी सत्यप्रकाश जी द्वारा एक परीक्षण मनुष्य को प्राकृतिक रूप से शाकाहरी सिद्ध करने के लिए किया था।

उन्होंने गौ से भरे हुए बाड़े में मानव शिशु को छोड़ दिया, सभी गौ आराम से चरती रहीं और किसी ने कोई प्रतिक्रिया नहीं दी। उसी बाड़े में उन्होंने शेर के एक छोटे शावक को छोड़ दिया, उसे देखकर सभी गौ ठिठक गईं और चरना छोड़कर रक्षात्मक रूप से खड़ी होकर उसे एकटक घूरने लगीं।

इस परीक्षण से सिद्ध हुआ कि मनुष्य स्वाभाविक रूप से शाकाहारी है।

शाकाहारी होना स्वास्थ्यकर है

यदि माँसाहारी स्वस्थ होते तो पाकिस्तान बांग्लादेश में १००% स्वस्थ होते। शाकाहारी प्रदेश हरियाणा, राजस्थान के लोग माँसाहारी बंगाल या केरल से अधिक स्वस्थ हैं।

ईशनिंदा का ठेकेदार बना पाकिस्तान

–धर्मपाल आर्य

अल्लाह का ठेकेदार पाकिस्तान है या पाकिस्तान का ठेकेदार अल्लाह? ये कोई कहावत या सवाल नहीं बल्कि एक जीती जागती सच्चाई है। आपने खबर सुनी होगी कि पाकिस्तान में एक मंदिर में भयंकर तोड़फोड़ की गयी। इसके बाद दूसरी खबर कि पाकिस्तान में एक आठ साल के हिन्दू बच्चे को ईशनिंदा कानून यानि अल्लाह के अपमान के कानून में गिरफ्तार कर लिया गया है। भारत के तमाम न्यूज पेपर्स के लिए ये भले ही मात्र एक छोटी खबर हो लेकिन ये सिर्फ एक खबर नहीं बल्कि एक आइना है जो तमाम पाकिस्तानियों के अलावा दुनिया को वहाँ के मुल्ला मौलवियों का नापाक बदसूरत चेहरा दिखाता है।

मामला सिर्फ इतना था कि इस बच्चे की मानसिक हालत ठीक नहीं है। उसने एक मदरसे में जाकर पेशाब कर दिया था। इसके बाद से वहाँ के एक स्थानीय मौलाना ने मुस्लिम कट्टरपंथियों को उकसाया। कट्टरपंथी इससे भड़क गए और उन्होंने पुलिस पर कार्रवाई के लिए दबाव बनाया। पुलिस ने बच्चे को हिरासत में ले लिया। लेकिन बाद में उसे जमानत पर रिहा कर दिया गया। बच्चे के छूटते ही कट्टरपंथी गुस्से में आ गए और सैकड़ों की तादाद में मंदिर में घुसकर उसमें तोड़फोड़ की। मंदिर लूटा गया उसे तबाह किया गया। अब पुलिस ने इस बच्चे को ईशनिंदा के आरोप में गिरफ्तार कर लिया है। हो सकता है कि कट्टरपंथी मुल्लाओं के दबाव के चलते कल उसे सजा ए मौत भी दे दी जाये!

यानि मामला था मदरसा प्रांगण। उसकी किसी दीवार के पास पेशाब करना। लेकिन ये चीज मुल्लाओं की बर्दास्त के बाहर हो गयी बवाल मचा दिया मदरसे की पवित्रता भंग करने की बात की गयी। तो हमने भी सोचा कि क्यों न पाकिस्तान के मदरसों की असलियत खंगाली जाये कि उनके मदरसे कितने पवित्र हैं, जो एक बच्चे को मौत देने पर तुल गये। अब खंगालने पर जो निकलकर आया वो सुनकर आपको भी चकित कर देगा।

ये कोई एक किस्सा नहीं है इसी साल 17 जून की बात है जब पाकिस्तान के एक मदरसे में एक बूढ़े मौलवी की सेक्स वीडियो लीक हुई थी। इसके अलावा भी पाकिस्तान में 22 हजार मदरसे हैं, जिनमें 20 लाख से अधिक बच्चे पढने जाते हैं। खुद पाकिस्तान के अखबार लिखते हैं कि यहाँ पढ़ाने वाले अधिकांश मौलवी और मौलानाओं का व्यवहार बच्चों के प्रति वहशियाना ही होता है। चूंकि मदरसों पर नजर रखने के लिए पाकिस्तान में कोई केंद्रीय निकाय या केंद्रीय प्राधिकरण नहीं है, इसलिए बच्चे-बच्चियों को प्रताड़ित करने वाले उनके साथ कुकर्म करने वाले मासूम बच्चियों से रेप करने वाले मौलवी, मौलानाओं का कोई बाल बांका नहीं कर सकता।

अगर कोई ऐसा करने की हिम्मत करता भी है तो उसका अंजाम मौत होता है क्योंकि कुकर्म करता मौलवी जब पकड़ा जाता है तो वो बाहर निकलकर शोर मचा देता कि देखो इसने ईशनिंदा की, पैगम्बर का अपमान किया। ऐसा करते ही मौलवी बच जाता है और उसे कुकर्म करते पकड़ने वाले निर्दोष को सजा के रूप में उम्रकैद या मौत की सजा मिलती है।

अब इसमें इनका एक दूसरा भी नाटक देखिये जब ये लोग किसी पर ईशनिंदा का आरोप जड़ते हैं और उसकी पैरवी के लिए कोई वकील

खड़ा होता है तो ये लोग उसे भी ईशनिंदक या अल्लाह की बेइज्जती करने वाला घोषित कर देते हैं। कई केस तो ऐसे भी हुए जिनमें पैरवी करने वाले वकील या नेता भी मारे गये।

थोड़े समय पहले एक ईसाई महिला थी नाम था आसिया बीबी। वो काम के लिए खेतों में गई थी लाहौर से दक्षिण पूर्व में करीब 40 मील दूरी पर उनका गांव था। वो जून का महीना था जब महिलाएं फसल इकट्ठा करने के लिए खेतों में जमा हुई थीं। चिलचिलाती धूप में,कई घंटे काम करने के बाद थकी और प्यासी महिलाएं सुस्ताने के लिए थोड़ी देर बैठ गई थी। किसी ने आसिया को नजदीक के कुएं से पानी निकालकर लाने को कहा- आसिया नजदीक की एक टच्यूबवेल पर गयी पानी का जग भरा और रास्ते में उसने ऐसे करके जग से दो चार घूंट पानी पी लिया। ये देखकर बाकी की मुस्लिम महिला इतनी नाराज हो गयीं कि आसिया पर ईशनिंदा का आरोप जड़ दिया। ना किसी ने असलियत जानी समझी और आसिया जेल में ठूस दी गयी। उन दिनों पाकिस्तान पंजाब के गवर्नर सलमान तासीर हुआ करते थे। सलमान तासीर आसिया बीबी से मिलने जेल पहुँचे लेकिन ये बात अल्लाह के ठेकेदारों को नागवार गुजरी और इसके चंद दिन बाद ही उसके गनर मुमताज कादरी ने गोलियों से भूनकर उसकी हत्या कर दी।

इस घटना के दस साल बाद आसिया को जमानत मिली लेकिन जमानत मिलते ही पूरा पाकिस्तान जल उठा सड़कों पर आग लगा दी गयी। जैसे इस आठ साल के हिन्दू बच्चे को जमानत मिलने पर लगाई ठीक ऐसे ही। लेकिन आसिया की किस्मत ठीक थी यूरोप अमेरिका जैसे ईसाई देश इस मामले में कूद गये और आसिया को पाकिस्तान से बाहर निकाल लिया।

अब सबकी किस्मत तो आसिया जैसी नहीं होती। अभी कुछ साल पहले की बात है एक ईसाई लड़का था नाम 'अयूब मसीह' साइकिल में पंचर लगाने का काम करता था। एक मुल्ला उसके पास पंचर लगवाने पहुँचा अयूब ने 20 रूपये मांगे। उसने कहा– दस दूँगा। जब बात आगे बढ़ी तो मुल्ला ने शोर मचा दिया कि कि देखो पैगम्बर का अपमान कर दिया। भीड़ ने अयूब मसीह को पकड़कर उसका तिया पांचा कर दिया।

यानि कट्टरपंथी मुल्लाओं का सबसे सटीक हथियार है ईशनिंदा। जिसे चाहें जब चाहें उस पर आरोप लगाकर मजहबी भीड़ के बीच फेंक देते हैं। 'राशिद रहमान' तो एक जाने माने 'मानवाधिकार' वकील थे। रहमान उन चुनिंदा वकीलों में शामिल थे जो ईशनिंदा का आरोप झेल रहे लोगों का केस लड़ते थे। 8 मई, 2014 को दो बंदूकधारियों ने राशिद रहमान के ही ऑफिस में उनकी हत्या कर दी थी। हत्या के बाद मुल्तान शहर की अदालत परिसर में वकीलों के चेंबरों के पास पर्चे बांटे गए, जिनमें लिखा था ईशनिंदा करने वालों की रक्षा करने वाले राशिद का अंत हुआ। जो आगे ऐसा करेगा उसका भी यही अंत होगा।

इसी दौरान जुलाई में अहमदियों के साथ एक हिंसक घटना हुई। क्रिकेट के मैदान से शुरू हुए झगड़े के बाद एक मुल्ला ने अहमदिया युवा पर ईशनिंदा का आरोप लगा दिया। इसके बाद उग्र मजहबी भीड़ ने करीब एक दर्जन अहमदियों के घरों में आग लगा दी। तथा एक परिवारों के तीन लोगों को जिन्दा आग में भून दिया। जबकि मामला सिर्फ क्रिकेट में इतना था कि अम्पायर बने अहमदिया युवा ने बोलर की अपील पर उस को आउट करार दे दिया था।

एक और ऐसा ही अन्य मामला हुआ ये एक ईसाई महिला थी नाम था शमा। सुंदर थी एक कट्टरपंथी मुल्ला का उस पर दिल आ गया। उसने

(शेष पृष्ट २७ पर)

वेदोत्पत्ति पर वेद का कथन

–उत्तरा नेरूर्कर, बंगलौर (मो०–९८४५०५८३१०)

वेदों की उत्पत्ति के विषय में परम्परा से प्राप्त कुछ तथ्य हमें ज्ञात होते हैं । परन्तु वेद भी अपनी उत्पत्ति की कहानी बताते हैं । साथ ही साथ, वे वैदिक ज्ञान की महत्ता पर भी प्रकाश डालते हैं। इसका एक विवरण ऋग्वेद के दशवें मण्डल के ७१वें सूक्त में प्राप्त होता है, जो कि बहुत ही सुन्दर और हृदयग्राही है । इस सूक्त के कतिपय मन्त्रों की व्याख्या मैं इस लेख में दे रही हूँ ।

वेदों के विषय में एक किंवदन्ती प्राप्त होती है कि वेदों का प्रादुर्भाव मनुष्यों के प्रादुर्भाव के साथ होता है । परन्तु जिन पवित्र आत्माओं में वेदों का प्रादुर्भाव होता है, वे मनुष्य नहीं, अपितु विशेष जीव होते हैं, जो कि दिखने में तो मानव के समान ही होते हैं, परन्तु उनका माता से जन्म नहीं होता, अपितु वे युवावस्था में ही उत्पन्न होते हैं । ऐसे चार ऋषियों के अन्तःकरण में एक-एक वेद का साक्षात्कार होता है । सम्भवतः, जिस वेद का जिसमें प्रादुर्भाव होता है, उसके अनुसार उस ऋषि का नाम पड़ जाता है । सो, ऋग्वेद को प्राप्त करने वाले ऋषि अग्नि होते हैं, यजुर्वेद को ऋषि वायु, सामवेद को ऋषि आदित्य और अथर्ववेद को ऋषि अंगिरा। ये फिर मिलकर ऋषि ब्रह्मा को इनका प्रवचन करते हैं । इस प्रकार ब्रह्मा पहले ऐसे ऋषि होते हैं जो कि चारों वेदों के ज्ञाता होते हैं । तदनन्तर ये ऋषि अन्य ऋषियों और मनुष्यों को इस ज्ञान का उपदेश देते हैं । धीरे-धीरे ये अद्भुत मानव-रूपी ऋषि पृथिवी पर से उठ जाते हैं, और मनु आदि मानव ऋषि इस ज्ञान परम्परा का निर्वहन करते हैं । स्वामी दयानन्द ने भी इस किंवदन्ति का उपदेश दिया है (इस विषय को अन्त में थोड़ा और देखेंगे)। वेद भी इसका संकेत देते हैं । उनमें से एक स्थल नीचे वर्णित है ।

ऋग्वेद १०/७१ का ऋषि 'बृहस्पतिः' है और देवता 'ज्ञानम्' । बृहस्पति परमात्मा का वह रूप है जो कि इस सूक्त का कथन कर रहा है और पहले ही मन्त्र में हमें उसके दर्शन हो जाते हैं–

बृहस्पते प्रथमं वाचो अग्रं यत् प्रैरत नामधेयं दधानाः ।
यदेषां श्रेष्ठं यदरिप्रमासीत् प्रेणा तदेषां निहितं गुहाविः ॥ ऋग्वेदः १०।७१।१॥

अर्थात् हे बृहस्पति, जो आप वेदवाणी रूपी बृहत् ज्ञान के भण्डार के स्वामी हो ! आपने सबसे पहले (=मानवसृष्टि के आदि में),(पदार्थ मात्र के) नामों (=भाषा)का धारण करती हुई जिस वाणी (=वेदवाणी)को प्रेरित किया, जो इन (आत्माओं) में से सबसे श्रेष्ठ थे, जो सब प्रकार के पापों से रहित थे, उनकी गुहा रूपी बुद्धि में उसके ज्ञान का, आपकी प्रेरणा से आविर्भाव हुआ ।

यहाँ स्पष्ट रूप से वेदवाणी का प्रथम अतिपवित्र ऋषियों के अन्तःकरण में सम्पूर्णतया (केवल अर्थमात्र नहीं, अपितु काव्यरूप में) आविर्भाव होने का कथन हम पाते हैं । 'बृहस्पति' पद द्वारा परमात्मा का इस प्रसंग में सम्बोधन भी अत्यन्त अर्थपूर्ण है । वह वेदों में भरी सारे ब्रह्माण्ड की विद्या के स्वामी को तो बता ही रहा है, परन्तु मुख्यतया परमात्मा को वेदों के आधार के रूप में स्थापित कर रहा है । सूक्त के ऋषि-रूप में यह पद प्रत्येक मन्त्र से जुड़कर, मन्त्र में परमात्मा को उपस्थित कर देता है ।

जो इस मन्त्र में वेदों द्वारा सब पदार्थों के

नामकरण की बात कही गई है, उसे ही मनु ने इस प्रकार कहा–

सर्वेषां तु स नामानि कर्माणि च पृथक् पृथक् ।
वेदशब्देभ्य एवादौ पृथक संस्थाश्च निर्ममे ॥ मनुस्मृतिः १।२१॥

अर्थात् वेद शब्दों के द्वारा ही आदि (सृष्टि) में पदार्थ-मात्र के नाम, कर्म व उनका विभागीकरण स्थापित हुआ ।

अब इन ऋषियों ने इस विद्या का क्या किया, इसके लिए दूसरा मन्त्र कहता है–

सक्तुमिव तितउना पुनन्तो यत्र धीरा मनसा वाचमक्रत ।
अत्रा सखायः सख्यानि जानते भद्रैषां लक्ष्मीर्निहिताधि वाचि ॥

॥ ऋग्वेदः १०।७१।२॥

अर्थात् इन धीरों, या अतिशय बुद्धिमान् ऋषियों ने ध्यान में मग्न होकर उस वेदवाणी को, चालनी से जैसे सत्तू को शोधा जाता है, वैसे शुद्ध रखते हुए, अपनी बुद्धि में प्रकट किया (अर्थात् अपने किसी विचार से परमात्मा की वाणी का संयोग न होने देते हुए, परमात्मा की वाणी को शुद्ध रखा)। ऐसा करते हुए, वे जो वह वाणी बता रही है, जो उसके पदों व वाक्यों के अर्थ हैं, उसका साक्षात्कार कर लेते हैं, और जो उस वाणी में अर्थ के लक्षण निहित हैं, उनको जान लेते हैं ।

यहाँ वेदों के साक्षात्कार करने की प्रक्रिया का विवरण किया गया है, और यह भी बताया गया है कि शब्दों का उनके अर्थों से सम्बन्ध कैसे उनमें पहले से ही विद्यमान है । कभी यदि उनके अर्थों का लोप हो जाए, तो पुनः ध्यान-प्रक्रिया से उनको ढूंढना पड़ेगा । इसीलिए स्वामी दयानन्द ने सत्यार्थप्रकाश, सप्तम समुल्लास में कहा– "परमेश्वर ने (वेदभाषा को) जनाया, और धर्मात्मा, योगी, महर्षि लोग जब-जब जिस-जिसके अर्थ को जानने की इच्छा करके ध्यानावस्थित हो परमेश्वर के स्वरूप में समाधिस्थ हुए, तब-तब परमात्मा ने अंभीष्ट मन्त्रों के अर्थ जनाए ।" इसी कारण से वेदों को नित्य कहा गया है और उनके शब्द व अर्थों से सम्बन्ध को भी । उनका सर्वथा लोप असम्भव है ।

यहाँ 'लक्ष्मी' पद में श्लेषालंकार है–जहाँ उससे एक ओर लक्षण का ग्रहण होता है, वहीं दूसरी ओर उससे वेदवाणी में निहित अपार ज्ञान की निधि को भी कहा गया है ।

इस सम्पूर्ण सूक्त में सखा, सखाय पदों का प्रयोग हुआ है । लौकिक भाषा में इनका अर्थ मित्र व मैत्री होता है, परन्तु इनके यौगिक अर्थ कहीं गहरे हैं ! जिन दो वस्तुओं का समान ख्यान=वर्णन होता है, उनको सखा कहते हैं, और सखा के भाव को सखाय । लोक में मित्र भी ऐसे होते हैं क्योंकि हमारी मित्रता किससे होती है ? –उससे जो हमारा जैसा हो, जिसकी सोच, जिसकी रुचि, जिसका चाल-चलन हमसे मिलता हो –अर्थात् जिसका वर्णन हमारे समान हो ! इस सूक्त में सर्वत्र वेदवाक्यों से सखाय का वर्णन है । यह इसलिए है कि वेदवाक्यों को समझने के लिए हमें वाणी में निहित अर्थों को इस प्रकार समझना होता है जैसे कि वे हमारे सामने खड़े हों ! इसी को 'मन्त्रों का साक्षात्कार' कहा जाता है । यही 'मन्त्रों का सखाय' है । दूसरी ओर, लौकिक भाषा में हम यह भी समझ सकते हैं कि हमें वेदमन्त्रों से मित्रता करनी है –उनके अर्थों, उनके प्रयोजन को हम तब ही समझ सकते हैं !

अगला मन्त्र इस विषय को आगे बढ़ाता है–

यज्ञेन वाचः पदवीयमायन् तामन्वविन्दन्नृषिषु प्रविष्टाम् ।
तामाभृत्या व्यदधुः पुरुत्रा तां सप्त रेभा अभि सं नवन्ते ॥ ॥ ऋग्वेदः १०।७१।३॥

अर्थात् यज्ञरूपी परमात्मा द्वारा वाणी पदों को प्राप्त होती है, शब्दों में परिणत होती है । उपरि-कथित ऋषिजन उसको जब ढूँढने बैठते हैं, तो वह उनमें प्रविष्ट हो जाती है । उसको सम्पूर्णतया धारण करके, वे उसे अनेक स्थानों में प्रसारित करते हैं । सात छन्दों में बद्ध वेदवाणी को लक्ष्यीकृत्य करके, वे उसकी स्तुति करते हैं।

यहाँ 'यज्ञ' का अर्थ मानसयज्ञ अर्थात् ध्यान भी सम्भव है, जिससे प्रथम पाद का अर्थ बनेगा– ऋषिजन ध्यान में मग्न होकर वेदवाणी के पदों के अर्थों को प्राप्त करते हैं ।

मन्त्र में पुनः हमें संकेत मिलता है कि ईश्वर से ही वेदों की उत्पत्ति हुई है ।

वेद के प्रत्येक पद का बहुत महत्व है और जिन छन्दों में वे वाक्य बद्ध हैं, वे भी अत्यन्त महत्त्वपूर्ण हैं। क्योंकि वेद परमात्मा के महान् कृत्य हैं, इसीलिए उसको इस मन्त्र में 'यज्ञ' नाम से पुकारा गया है । जो भी वेदमन्त्रों के अर्थों को समझता है, वह वेदों और उनके कर्ता परमात्मा की स्तुति किए बिना नहीं रह सकता । इसीलिए हम पाते हैं कि सारे ब्राह्मण, आरण्यक उपनिषद्, दर्शनशास्त्र इत्यादि प्राचीन ग्रन्थ, सभी वेदों की स्तुति करते नहीं थकते ! वेदों का प्रचार-प्रसार सभी वेदज्ञाताओं का परम कर्तव्य है ।

मनुष्य और ऋषि

अब थोड़ा अमैथुनी सृष्टि व आदि ऋषियों व मनुष्यों के विषय में कुछ प्रमाण देख लेते हैं।

अमैथुनी सृष्टि के विषय में स्वामी दयानन्द सत्यार्थप्रकाश, सप्तम समुल्लास में लिखते हैं– "आदि सृष्टि मैथुनी नहीं होती, क्योंकि जो स्त्री-पुरुष के शरीर परमात्मा बनाकर उनमें जीवों का संयोग कर देता है, तदनन्तर मैथुनी सृष्टि चलती है ।" आगे प्रश्न पूछा जाता है– आदि सृष्टि में मनुष्य आदि की बाल्य, युवावस्था या वृद्धावस्था में सृष्टि हुई थी, अथवा तीनों में ? तो स्वामी जी उत्तर देते हैं –"युवावस्था में, क्योंकि जो (ईश्वर) बालक उत्पन्न करता, तो उनके पालन के लिए, दूसरे मनुष्य आवश्यक होते और जो वृद्धावस्था में बनाता तो मैथुनी सृष्टि न होती। इसलिए युवावस्था में सृष्टि की है ।" इन दोनों वाक्यों में विरोध प्रतीत होता है –आदि सृष्टि मैथुनी थी कि नहीं ? पहले वाक्य में ही स्पष्टतः महर्षि ने उसका खण्डन किया है ! इसका उत्तर इन दोनों वाक्यों के मध्य में बहुत संकेतात्मक रूप से प्राप्त होता है– **"...'मनुष्या ऋषयश्च ये; ततो मनुष्या अजायन्त'** –यह यजुर्वेद और उसके ब्राह्मण में लिखा है ।" यहाँ जो वाक्य महर्षि ने उद्धृत किया है, वह यजुर्वेद अथवा ब्राहाण में तो मुझे नहीं मिला, तथापि उसके अर्थ बड़े रोचक हैं । यह वाक्य स्पष्टतः कह रहा है कि आदि सृष्टि में मनुष्य और ऋषि –ये दो प्रकार के जीव हुए । उसके अनन्तर केवल मनुष्य ही रहे । यह भेद वही है जो मैंने पूर्व में बताया । इससे मिलता-जुलता मन्त्र मुझे ऋग्वेद में अवश्य मिला–

चाक्लृप्रे तेन ऋषयो मनुष्या यज्ञे जाते पितरो नः पुराणे ।
पश्यन् मन्ये मनसा चक्षसा तान् य इमं यज्ञमयजन्त पूर्वे ॥ ऋग्वेदः १०।१३०।६॥

इस ब्रह्माण्ड के उत्पन्न होने पर, बहुत पहले (मनुष्य-सृष्टि काल में), उस (परमात्मा) ने ऋषियों और हमारे मनुष्य-पितरों (मनुष्य जो प्रजोत्पत्ति के द्वारा हमारे पितर बने) को (वेद-मन्त्रों से) समर्थ किया, उन (वेद-मन्त्रों) के मन के चक्षु से देखते हुए जिन ऋषियों और मनुष्यों ने उस यज्ञ = परमात्मा/वेदों का आरम्भ यजन किया था । यह मन्त्र भी उन विशेष प्रारम्भिक ऋषियों को मनुष्य-जाति से पृथक् रख रहा है ।

(शेष पृष्ठ ११ पर)

काबुल में तालिबान–अब आगे क्या होगा ?

–राजीव चौधरी (मो०–९५४००२९०४४)

पासा पलट गया या पहले से ही पलटा पलटाया पड़ा था? अब बन्दूक की नोक से थोड़ी बहुत औपचरिकता थी वो भी पूरी हो गयी। यानि काबुल की सत्ता पर तालिबान बैठ गया। अफगान राष्ट्रपति गनी, अफगानिस्तान छोड़कर भाग गया। पूरी दुनिया अब विश्लेषण करने में लगी पड़ी है कि आखिर इतना जल्द कैसे मात्र कुछ हजार तालिबानी, काबुल की लाखों की सेना को परास्त करके राष्ट्रपति गनी की कुर्सी पर अपने सेल्फी ले रहे हैं।

आज विश्व भर के राजनितिक विश्लेषक दुनिया को बता रहे हैं कि तालिबानी लड़ाके काबुल में प्रवेश कर चुके हैं। दुनिया भर के सवाल जवाब हो रहे है। कहानियाँ लिखी जा रही हैं, तालिबान का वर्जन 2 कैसा होगा? अफगानी शरणार्थी कहाँ जायेंगे? अब वहाँ महिलाओं की स्थिति कैसी होगी? हालाँकि कुछ को अमेरिका शरण दे रहा है कुछ को भारत। लेकिन मुस्लिम देश क्यों शरण नहीं दे रहे हैं इस पर कोई विश्लेषण नहीं हो रहा है! और ना होगा। आगे हो सकता है कि कुछ बच्चों की लाशें अखबार के पन्नों पर फेंक दी जायें और सेड म्यूजिक के साथ रोते बिलखते एंकर आयेगी इससे गैर इस्लामिक जगत संवेदनशील होगा और शरणार्थी शरण पा जायेंगे।

कहा जा रहा है अफगानिस्तान तो भारत का मित्र है। लेकिन कैसे समझाए कि दो देशों की कोई मित्रता नहीं होती। कोई रिश्तेदारी नहीं होती। उनके सम्बन्ध आपसी व्यापार और फायदे पर टिके होते हैं। अभी तक रूस भारत का मित्र था, क्योंकि सभी हथियार वहाँ से आते थे। अब भारत जैसे ही अमेरिका और यूरोपीय देशों के निकट गया। तब रूस पाकिस्तान की मित्रता आगे बढ़ गयी। ऐसे ही अब गनी रफूचक्कर हो गया दोस्ती भी रफूचक्कर हो गयी। यहाँ से आगे अफगानिस्तान, पाकिस्तान का दोस्त होगा क्योंकि तालिबान पाकिस्तान से हथियार लेगा।

ऐसे तमाम विश्लेषण सामने आ रहे हैं लेकिन इन विश्लेषणों में असली सवाल दबकर रह गये कि तालिबान ने थोड़े ही दिन में पूरे अफगानिस्तान पर कब्जा कर लिया ! दुनिया के तमाम वामपंथी न्यूज पेपर, पोर्टल, टी.वी. एंकर इसके लिए अमेरिका को दोष देने में लगे हैं। ताकि पाकिस्तान चाइना और रसिया को क्लीनचिट दी जा सके। क्या आज से 20 साल पहले अमेरिका ने अफगानिस्तान पर हमला सिर्फ इसलिए किया था कि वहाँ शासन करें? शायद नहीं! क्योंकि अफगानिस्तान पर हमला सिर्फ इसलिए किया था कि तालिबान ने ओसामा बिन लादेन को उनको देने से मना कर दिया था। अगर वो ओसामा को दे देते तो अमेरिका हमला ही नहीं करता।

ओसामा को मारने के बाद भी अमेरिका ने अफगानिस्तान की सेना और धन से बहुत मदद की। अफगान सेना को उच्च क्वालिटी की ट्रेनिंग दी, हथियार दिए पैसा दिया। अब तालिबान से लड़ने की जिम्मेदारी अफगान सेना और जनता की थी। जिसमे वे विफल रहे। और शायद वे लड़ना भी नहीं चाहते ! कारण शायद खुद उनकी मानसिकता भी तालिबानी है। अफगानी जनता ही नहीं अधिसंख्य मुस्लिम समाज की मानसिकता ही तालिबानी है।

इसका जीता जागता उदहारण ये है कि अफगानिस्तान के सुरक्षा बलों की अधिकृत संख्या तीन लाख 52 हजार है। जुलाई, 2020 तक

अफगानिस्तान के रक्षा मंत्रालय में इनकी संख्या एक लाख 85 हजार 478 थी। इसके तहत सेना, वायु सेना और स्पेशल ऑपरेशन फोर्सेज (एस.ओ.एफ.) आती हैं। अफगानिस्तान के आंतरिक मंत्रालय में यह संख्या एक लाख तीन हजार 224 है। इसके तहक विभिन्न पुलिस बल आते हैं। इन्हें मिलाएं तो सुरक्षा बलों के कुल अधिकारियों की संख्या दो लाख 88 हजार 702 बैठती है। साल 2019 में जारी किए गए अफगान नेशनल आर्मी (ए.एन.ए.) के आंकड़ों के अनुसार अफगानिस्तान की सेना में करीब एक लाख 80 हजार सैनिक हैं। जिनकी अब काफी संख्या बढ़ चुकी है। 167 लड़ाकू विमान भी है जबकि तालिबान के पास ना कोई लड़ाकू विमान है और उनकी संख्या भी कुल 70 हजार के आसपास बताई जाती है। अफगान आर्मी का रक्षा बजट करीब साढ़े पांच बिलियन डालर है और तालिबान का डेढ़ अरब फिर तालिबान जीत रहे क्यों यार ये तो बड़ा आश्चर्य है।

लेकिन क्या इसमें सच में आश्चर्य है? शायद नहीं। क्योंकि कहानी साफ है 1962 में चीन की सेना ने अरुणाचल प्रदेश के आधे से भी ज्यादा हिस्से पर कब्जा कर लिया था। लेकिन स्थानीय लोगों द्वारा चीनी सेना के प्रति विद्रोह हुआ और आम अरुणाचल वासियों ने ही चीन की सेना को वापिस लौटने पर मजबूर कर दिया था। लेकिन अफगानिस्तान में ऐसा कुछ देखने को नहीं मिला। तालिबान एक के बाद एक प्रान्त पर कब्जा करते चले गये और अफगानी नागरिक उसे स्वीकार करते चले गये। मसलन जब अफगान लोगों को ही तालिबान पसंद है तो हम क्या करें? कहीं ना कहीं वो भी खुद तालिबानी मानसिकता से पीड़ित हैं! मात्र कुछ हजार अमेरिकी सैनिक तालिबान को बीस साल तक दबाये बैठे रहे और आज उनके निकलते ही लाखों की अफगान फौज हार गयी हो तो सोचिये अफगान सैनिक किसके साथ थे?

दूसरा आखिर क्या कारण है कि 56 मुस्लिम देशों मे से किसी ने भी तालिबान का विरोध नहीं किया। किसी सेक्यूलर, मुस्लिम उदारवादी ने तालिबान का विरोध नहीं किया। रिहाना ग्रेटा का कोई ट्वीट नहीं आया। अपने देश में ही किसी मुस्लिम बुद्धिजीवी ने तालिबान का विरोध किया क्या? अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी और जामिया मे कोई प्रोटेस्ट मार्च नहीं निकला? किसी मुल्ले मौलवी ने तालिबान के खिलाफ फतवा नहीं किया? क्यों वे तालिबान की जीत पर खुश हैं और खुश इसलिए हैं कि वो खुद मानसिकता से तालिबानी हैं और यही मूल समस्या है कि आम मुस्लिम, मानसिकता से आज भी तालिबानी है।

उदहारण ऑर्गेनाइजेशन ऑफ इस्लामिक को-ऑपरेशन यानी इस्लामी सहयोग संगठन ने एक बयान जारी कर कहा है कि वह अफगानिस्तान के संकट से चिंतित हैं। लेकिन तालिबान पर एक शब्द नहीं बोला। कभी तालिबान को अपना दुश्मन मानने वाला शिया देश ईरान आज तालिबान के साथ खड़ा है। उजबेकिस्तान और ताजिकिस्तान दोनों मुस्लिम देश हैं। लेकिन अफगानी शरणार्थियों को अपने देश में घुसने नहीं दे रहे हैं। तुर्कमेनिस्तान के पहले से ही तालिबान से संबंध मजबूत हैं वो भी अफगान शरणार्थियों को लात मार रहा है। पाकिस्तान और तालिबान का हमेशा से ही एक रिश्ता रहा है।

तीसरा चिंता का विषय ये है कि सारी दुनिया के कम्युनिस्ट और तथाकथित प्रोग्रेसिव लिबरल की इस विषय में षड्यंत्रकारी चुप्पी। गाजा पट्टी और रोहिंग्या मुस्लिम के लिए खून के आँसू रोने वाले ये लिबरल आज कहाँ मर गए? कोई तालिबान की बात नहीं कर रहा, उल्टे दबे स्वर मे तालिबान की तारीफ ही हो रही है। इसका साफ कारण ये है कि जो आज तालिबान ने किया ऐसा तो कम्युनिस्ट 100 सालों से करते आये हैं। वामपंथियों ने क्यूबा पर सेम इसी तकनीक से हमला किया था। रूस में

जार को हटाना हो या चीनी क्रांति ये ही तो वर्जन था जिसे आज तालिबान ने लागू किया। कम्युनिस्ट तो स्वयं में एक आतंकी फासिस्ट विचारधारा है मुस्लिम आतंकवाद के साथ है। यही कम्युनिस्ट सारी दुनिया में भेष बदल कर लिबरल के रूप में घुसे हुए हैं। इन कम्युनिस्टों का इस्लामिक आतंकवाद से गठबंधन है। दोनों के अंदर ही तालिबानी मानसिकता है क्योंकि जिस अफगान सेना को अमेरिका ने 20 सालों से तैयार किया था वह ताश के पत्तों की तरह बिखर गयी। कई राज्यों ने तो बिना लड़े ही तालिबान के आगे समर्पण कर दिया।

जिम्मेदारी ना भारत की है ना अमेरिका की। जिम्मेदारी है अफगान जनता की, अफगान लोगों की। अफगान के समाज की। सवाल कीजिये कि आखिर तालिबानी, तालिबान 70 हजार आतंकी कहाँ से ले आया? उसे हथियार और पैसा कहाँ से मिल रहा है? क्यों आज 70 हजार तालिबानी विश्व की महाशक्तियों को आँख दिखा रहे हैं? क्योंकि उसे 56 देशों का समर्थन और इस्लामी तालिबानी मानसिकता का पूर्ण समर्थन मिल रहा है।

अगर आप तालिबान के काबुल पर कब्जे से दुखी द्रवित हैं तो ये दु:ख का विषय नहीं है। क्योंकि ये उनके समाज की मानसिकता का आइना है। इस आईने को सामने खड़े होकर देखिये आप हिन्दू सिख बौद्ध संगठन बनाकर देखो कितने लोग जुड़ते हैं, कितने लोग आपके साथ खड़े होते हैं! लेकिन एक बगदादी खड़ा होता है तो उसे लाखों लड़ाके मिल जाते हैं। एक ओसामा खड़ा होता है उसे भी हजारों ओसामा मिल जाते हैं। कोई बोकोहरम जब खड़ा होता है उसे भी इस्लाम के लिए लड़ने वाले मिल जाते हैं। सिर्फ अपने देशों से नहीं बल्कि सीरिया और इराक में आई.एस.आई.एस. के साथ खड़े होने के लिए तालिबानी मानसिकता को आगे बढ़ाने के लिए मिल जाते हैं। भारत जैसे देशों के मुस्लिम भी शामिल हो जाते हैं, यूरोप के मुसलमान अरब आ जाते हैं। क्योंकि उनकी नजर में यही सही इस्लाम है। जो आई.एस.आई.एस. और तालिबानियों को इस्लाम का सही चेहरा मानते हैं।

यह अभी इस पटकथा का पहला चेप्टर है। दूसरा चेप्टर तालिबान की हिंसा होगी। तीसरे चेप्टर में उसकी निंदा होगी। चौथे में अफगान शरणार्थी गैर मुस्लिम देशों की शरण लेंगे। हर बार यही तो होता है। अब बस ये देखना है कब से हमें एक एक नया चेप्टर पढने को मिलेगा। ❑❑

वेदोत्पत्ति पर वेद का कथन (पृष्ठ ८ का शेष)

इस विषय में एक और मन्त्र द्रष्टव्य है–

यदाकूतात् समसुस्त्रोद्धृदो वा मनसो वा सम्भृतं चक्षुषो वा ।
तदनुप्रेत सुकृताम् लोकं यत्र ऋषयो जग्मु: प्रथमजा: पुराणा: ॥ ॥यजुर्वेद:१८।५८॥

जो (मनुष्य सत्य प्राप्त करने के) उत्साह से अपनी बुद्धि, मन और इन्द्रियों से सत्य को प्राप्त कर, उस सुकृत करने वालों के लोक को प्राप्त करते हैं, जिसको प्रथम जन्म लेने वाले, पुराने ऋषि गए थे। यहाँ पुन: प्रथम उत्पन्न ऋषियों को पश्चात् ऋषि-संज्ञक महानुभावों से पृथक् रखा गया है।

इस प्रकार यह अत्यन्त अद्भुत किंवदन्ती के अनेक उल्लेख प्राप्त होते हैं। आज यह हमारी समझ के परे हो, परन्तु हमें 'सम्भव' की कोटि में रखना चाहिए।

उपर्युक्त वेद मन्त्र उस किंवदन्ती की पुष्टि करते हैं जो परम्परा से हमें ऋषियों की वाणी में प्राप्त होती आ रही है। यह एक और कारण है जिससे वेदों की अपौरुषेयता पर किसी को भी सन्देह करना युक्त नहीं है। ❑❑

॥ ओ३म् ॥

हादसों पर हादसे हैं ?

—राजेशार्य आट्टा पानीपत-१३२१२२, (मो०: ०९९९९१२९१३१८)

प्रिय पाठकवृन्द ! पिछले दिनों किसी कार्यवश किन्हीं सज्जन से मिलने गया था । मेरे हाथ में इतिहास सम्बन्धी कोई पुस्तक देखकर वे बोले—आज तो कम्प्यूटर का युग है, पुरानी बातें पढ़ने से क्या लाभ ? मैंने कहा—इतिहास पढ़ने-पढ़ाने वालों ने कम्प्यूटर शिक्षा का कब विरोध किया है? और इतिहास व कम्प्यूटर ज्ञान में विरोध कहाँ है ? यह ठीक है कि व्यक्ति को बहुत सी व्यक्तिगत (परस्पर सम्बन्धों में कटुता उत्पन्न करने वाली) बातें भूलनी चाहिए, पर एक राष्ट्र को अपना इतिहास नहीं भूलना चाहिए । इतिहास में सब अच्छा लगने वाला नहीं होता और सब अप्रिय भी नहीं होता । कुछ घटनाएं प्रेरक होती हैं और कुछ भूलों से बचना सिखाती हैं । इतिहास न पढ़ने का परिणाम है कि एक बी. एस. सी. पास भारतीय मेधावी विद्यार्थी ने कहा कि कश्मीर न तो पाकिस्तान का है और न भारत का । ये दोनों तो इसके लिए व्यर्थ में लड़ रहे हैं ।

यदि भारत के 'राष्ट्रगान' में सिन्ध नहीं होता, तो कम्प्यूटर पढ़ने वाली पीढ़ी को तो यह भी पता नहीं चलता कि पाकिस्तान १९४७ ई० से पूर्व भारत का ही अंग था । ईरान व अफगानिस्तान में हमारे पूर्वजों (पाण्डु व धृतराष्ट्र) की ससुराल बताने वाले ग्रन्थ(महाभारत) को तो यह पीढ़ी काल्पनिक कविता मानती है । खैर, मैंने उन महाशय से कहा—अपने वीर पूर्वजों का बलिदानी इतिहास क्यों नहीं पढ़ना चाहिए? लोग पैसे व समय खर्च करके काल्पनिक फिल्में भी तो देखते हैं ।

वे बोले—आज हम ऐसे देश में रह रहे हैं जिस पर मुसलमानों का भी उतना ही अधिकार है, जितना हमारा है । मुस्लिम राजाओं को अत्याचारी कहने से वे नाराज हो जाते हैं, समाज में कटुता फैलती है । अच्छा यही है कि इतिहास की पुस्तकों में किसी भी मुस्लिम शासक द्वारा मन्दिर तोड़ने आदि का वर्णन न हो । यह सुनते ही मुझे याद आया कि २००९-१० ई० के लगभग मेरे एक परिचित लेखक ने भारत के कुछ ऐतिहासिक महापुरुषों की जीवनियां लिखी थीं, उनमें वीर हीकक़त राय के बलिदान का भी वर्णन था । हरियाणा साहित्य अकादमी ने उसे छापने से मना कर दिया, तो उस लेखक को अपनी पुस्तक छपवाने के लिए वीर हकीकत राय की जीवनी काटनी पड़ी थी, ताकि देश में शान्ति बनी रहे।

मैंने कहा—महोदय, इतिहास का यह सत्य हम ही नहीं अपितु मुस्लिम भी स्वीकार करते हैं कि भारतीय मुस्लिमों (९५%) के पूर्वज हिन्दू ही थे । भारत से हज यात्रा पर जाने वाले मुस्लिमों को अरब के लोग हिन्दू (परिवर्तित) मुस्लिम मानते हैं । फिर महमूद गजनवी, गोरी, बाबर आदि इनके क्या लगते हैं । इन्हें तो महाराणा प्रताप, शिवाजी आदि हिन्दू वीरों पर गर्व करना चाहिए, जिन्होंने विदेशी विधर्मियों से टक्कर ली । हमें उनसे देशभक्ति सीखनी चाहिए ।

यह सुनते ही वे बोले—महाराणा प्रताप, शिवाजी आदि सभी भारतीय राजा अय्यास थे । मैं इनका आदर नहीं करता । वे केवल अपने राज्य के लिए लड़े थे । तभी तो जनता ने इनका कोई साथ नहीं दिया । गरीब जनता तो कच्चे घरों में

रहती थी और इन राजाओं के पक्के किले व महल थे, जो अभी तक हैं, जबकि आम जनता के कोई घर नहीं बचे ।

मैंने कहा–मित्र, क्या मुस्लिम राजा अय्यास नहीं थे ? यदि हिन्दू राजाओं के महल अय्यासी की निशानी हैं, तो उन महलों से भी सुदृढ़, सुन्दर व विशाल मकबरों में सोने वाले बादशाह क्या झोपड़ियों में रहते थे ? यह तो निश्चित है कि हिन्दू राजा हमारे देश के ही थे, जबकि गजनवी, नादिरशाह तो विदेशी आक्रमणकारी व लुटेरे थे। उन्होंने हमारे देश की जनता को बेरहमी से काटा था ।

वे बोले–विदेशी होने से ही कोई बुरा नहीं होता । एक तरफ तो आप **'वसुधैव कुटुम्बकम्'** की बात करते हो, फिर यह देशी–विदेशी क्या हुआ ? जब कोई आदमी भूखा मरता हो, वह तो छीनेगा ही । यह कोई भी हो सकता है । इसी कारण उन्हें बुरा नहीं कहा जा सकता । ये सीमाएं ही झगड़े का कारण हैं। ये समाप्त होनी चाहिए।

मैंने कहा–यह तो सत्य है कि केवल विदेशी या विधर्मी होने से ही कोई बुरा नहीं होता, पर यह भी सत्य है कि लुटेरे चाहे कोई भी हों बुरे ही होते हैं । हम तो सारी पृथ्वी को परिवार मानते रहे, पर लुटेरे तो इन 'परिवार मानने वालों को कत्ल करते रहे व इनका धन लूटकर अपने देश में ले जाते रहे । भूखा आदमी मांग भी तो सकता है। यदि उसका स्वाभिमान मांगने से रोकता हो, तो स्वयं कमा भी सकता है । छीनकर खाना तो चोर, डाकू व लुटेरों का काम होता है । यह तो लेनिन व मार्क्स का सिद्धान्त हो सकता है किसी सभ्य समाज का नहीं ।

यदि सीमाएं ही झगड़े की जड़ हैं, तो आप अपने घर की सीमाएं (दीवारें) समाप्त करने की उदारता दिखाइये । अपने खून–पसीने की कमाई को सभी गरीबों में बराबर बांटकर समाजवाद को व्यवहारिक रूप दीजिये । सीमाएं (मर्यादा) कभी समाप्त नहीं हो सकतीं । हमारे आहार (क्या खाना व कितना खाना), निद्रा, भय, मैथुन आदि पशुवृत्ति भी सीमा रहित नहीं हो सकते । जंगली से जंगली मनुष्यों में भी मैथुन (विवाह आदि) के नियम होते हैं कि किसके साथ नहीं करना। फिर सभ्य मनुष्य सीमा रहित कैसे हो सकता है। महोदय, जिन रूस, चीन आदि देशों से प्रेरणा पाकर आप स्वमातृभूमि से द्रोह करते हो, उन्होंने कभी अपनी सीमाएं समाप्त नहीं की, अपितु पड़ोसियों की सीमाओं में घुसने का प्रयास ही किया है। यदि हमारे वीर सैनिकों को वर्तमान भारत सरकार की तरफ से मजबूत अस्त्र–शस्त्र न मिलते तो चीनी सैनिक कब के हमारी सीमाओं में घुस आते और आप जैसे निर्लज्ज उन्हीं की जय बोलते मिलते । जिस थाली में खाएं, उसी में छेद करें, ऐसे कृतघ्न तो भेड़िए भी नहीं होते । जो अपने राष्ट्र का नहीं हुआ, वह रूस, चीन का भी क्या होगा? गाड़ी में चलने वाले व्यक्ति को नीचे गिराकर पैदल चलाने वाले लोग माओवादी व लेनिनवादी तो हो सकते हैं, पर समाजवादी नहीं।

फिर वे बोले–यह सरकार (प्रधानमंत्री मोदी जी वाली) निर्दयी है, क्योंकि यह किसानों के प्रति उपेक्षा भाव रखती है । जब कोई सैनिक शहीद होता है, तो उसे खूब मान व धन दिया जाता है, टेलीविजन पर उसका प्रचार किया जाता है। पर जब कोई किसान मरता है, तो सरकार उसे कुछ नहीं देती ।

मैंने कहा–किसानों को भी सम्मान मिले इसी भावना से वर्तमान सरकार निश्चित समय पर निश्चित राशि किसानों के खाते में डाल रही है, पर आपको सैनिक के सम्मान से आपत्ति क्यों है? क्या आपको पता नहीं कि लगभग सभी सैनिक गरीब मजदूर व किसानों के ही बेटे हैं । फिर आप घर में ही फूट क्यों डाल रहे हो? क्या

पिछले ६५ वर्ष से किसान को यह सम्मान मिल रहा था, जो इस सरकार ने आकर बन्द कर दिया? शायद आप भी नहीं भूले होंगे कि २०१४ ई० से पहले कश्मीर में मेरे देश का बहादुर सैनिक हाथ में हथियार होते हुए भी वहाँ के मजहबी नमक हराम पत्थरबाजों से (लाचार बना) पिटता था, क्योंकि उसके हाथ बँधे हुए थे। इस सरकार ने वे हाथ खोल दिये हैं ताकि दूसरों की रक्षा करने से पूर्व वह अपनी रक्षा कर सके। यदि आपसे इतना भी सहन नहीं होता तो आप भारत छोड़कर अपने मन पसंद देश चीन, रूस या पाकिस्तान में चले जाइये, क्योंकि अब भारत बदल रहा है।

निरुत्तर होकर विषय बदलते हुए वे बोले– आप वैदिक संस्कृति का पक्ष तो ले रहे हो, पर हिन्दू अपने ही भाई को अछूत कहकर मन्दिर में नहीं जाने देते। हिन्दू चीजों में मिलावट करते हैं, रिश्वत लेते हैं, चोरी करते हैं। जबकि बहुत से मुस्लिम मेरे मित्र हैं और वे बहुत अच्छे इन्सान हैं। आप तो जानते हो अशफाक उल्ला, अब्दुल हमीद व ए.पी.जे. अब्दुल कलाम जैसे देशभक्त मुसलमान भी हुए हैं, फिर भी मुस्लिमों की देश भक्ति पर सन्देह किया जाता है। उन्हीं से देश भक्ति का सर्टीफिकेट क्यों मांगा जाता है।

मैंने कहा–हिन्दुओं की सामाजिक (छुआछूत, बाल-विवाह सती प्रथा आदि) बुराइयों व धार्मिक बुराइयों (अन्ध विश्वास, मूर्तिपूजा, पाखण्ड आदि) के विरुद्ध आर्यसमाज आपके सम्प्रदाय के जन्म (भारत में) से भी ५० वर्ष पूर्व से लड़ रहा है। उसी के परिणाम स्वरूप हिन्दुओं की बहुत सी बुराइयां दूर हो चुकी हैं, मुस्लिम व ईसाइयों की भी दूर हो जातीं यदि इन्होंने अपने आपको अरब व यूरोप के खूंटे से न बांधा होता।

मिलावट, रिश्वत, चोरी आदि करने वाला व्यक्ति चाहे किसी भी मत-पन्थ का हो वह समाज का शत्रु व देश-द्रोही कहलाएगा और उसे दण्ड मिलना चाहिए। देशभक्त होना मां की सेवा करने जैसा ही गुण है, जो किसी के द्वारा जबरदस्ती थोपा नहीं जा सकता। यह बात भी किसी सभ्य समाज के मनुष्य को बताने की जरूरत नहीं है कि जिस देश के साधनों व संसाधनों से हम सुख व सुरक्षा पाते हैं, हमें उसकी सर्वविध उन्नति में सहयोगी होना चाहिए।

यदि हजारों आतंकवादियों के कारण भारत के सभी मुस्लिमों की देशभक्ति पर संदेह करना ठीक नहीं है, तो दो-चार देशभक्तों (अशफाक, हमीद व कलाम) की देशभक्ति का श्रेय सभी मुस्लिमों को क्यों दिया जाये? मुस्लिम ही नहीं, इस भारत का वह हर मजहब सन्देह के घेरे में रहेगा, जिसकी आस्था की जड़ें विदेशी धरती व विदेशी पुरुषों (ईसा, मोहम्मद, मार्क्स, लेनिन आदि) से पोषण पाती हैं। सभी देशों व मजहबों में अच्छे-बुरे व्यक्ति होते हैं। फिर भी उन देशों व मजहबों की धार्मिक शिक्षा उनकी विचारधारा को प्रभावित करती है। किसी हत्यारे हिन्दू के बचाव में आन्दोलन करते हुए हिन्दू समुदाय को मैंने नहीं देखा और न किसी आतंकवादी के विरोध में बोलते हुए किसी मुस्लिम को सुना है। बस यही अन्तर है, जिसे आपकी दृष्टि नहीं देख पा रही है।

अधिकतर मनुष्य स्वार्थवश ही मित्र बनते हैं। स्वार्थ में बाधा पड़ने पर निकट सम्बन्धियों में भी शत्रुता हो जाती है। फिर भी मनुष्य सामाजिक प्राणी है, परस्पर के सहयोग के बिना वह नहीं रह सकता। वेद तो सब प्राणियों का निःस्वार्थ मित्र बनने की प्रेरणा देता है–**'सर्वा आशा मम मित्रं भवन्तु'** (सब दिशाओं के प्राणी मेरे मित्र बन जाएं)। ऐसी सहृदयता व उदारता सिखाने वाली अपनी वैदिक संस्कृति को मैं सर्वश्रेष्ठ क्यों नहीं मानूं! जिस देश की मिट्टी

(शेष पृष्ठ १८ पर)

पृथिवी सहित समस्त जड़-चेतन जगत को परमात्मा ने जीवात्माओं के लिये बनाया है

–मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून (मो० : ०९४१२९८५१२१)

हमारा यह संसार अर्थात् हमारी पृथिवी, सूर्य, चन्द्र आदि सब ग्रह-उपग्रह प्रकृति नामक अनादि सत्ता से बने हैं। प्रकृति भी संसार में चेतन ईश्वर व जीवात्मा से भिन्न स्वतन्त्र जड़ सत्ता हैं। इस अनादि प्रकृति को परमात्मा व अन्य किसी सत्ता ने नहीं बनाया है। इस प्रकृति का अस्तित्व स्वयंभू और अपने आप है। प्रकृति की ही तरह संसार में ईश्वर व जीव भी दो इतर सत्य एवं चेतन पदार्थ हैं । ईश्वर सत्य, चित्त व आनन्द-स्वरूप है। यह तीनों पदार्थ अनादि, नित्य, अजर, अमर, अविनाशी हैं । ईश्वर सर्वातिसूक्ष्म सत्ता है। जीवात्मायें तथा प्रकृति भी सूक्ष्म सत्तायें हैं परन्तु प्रकृति से सूक्ष्म जीव तथा जीव से भी सूक्ष्मतर परमेश्वर है। परमात्मा सच्चिदानन्दस्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ, सर्वव्यापक एवं सर्वान्तर्यामी सत्ता है। जीवात्मा का स्वरूप सत्य, चित्त, अल्पज्ञ, एकदेशी, ससीम, जन्म-मरण धर्मा, कर्म करने में स्वतन्त्र तथा फल भोगने में ईश्वर के आधीन व परतन्त्र है। ईश्वर संख्या में एक है तथा जीवात्मायें संख्या में अनन्त हैं ।

मनुष्य जीवों की संख्या को नहीं जान सकता इसलिए जीवों की संख्या को अनन्त कहा जाता है। ईश्वर जानता है कि जीवों की संख्या कितनी है और वह सब जीवों को उनके कर्मों के अनुसार जन्म व मरण तथा सुख व दुःख आदि प्रदान करता है। सुख व दुःख प्रदान करने में परमात्मा एक सच्चे न्यायाधीश का कार्य करता है। वह किसी जीव से पक्षपात नहीं करता। किसी भी जीव के पाप कर्मों को क्षमा नहीं करता। प्रत्येक जीव को अपने-अपने कर्मानुसार जन्म लेना पड़ता है तथा अपने कर्मों का फल भोगना पड़ता है।

यदि ईश्वर न होता और वह सृष्टि की उत्पत्ति व इसके पालन सहित जीवों को उनके कर्मानुसार फल प्रदान करते हुए जन्म व मरण की व्यवस्था न करता तो जीवों को शुभ करने का अवसर और उससे मिलने वाले सुख व आनन्द की प्राप्ति कदापि न होती ।

इस महान कार्य के लिये सभी जीव ईश्वर के प्रति एक विधाता, पिता व आचार्य के समान कृतज्ञ होते हैं और उसका नित्य प्रति ध्यान करना, उसकी स्तुति, प्रार्थना व उपासना करना उनका कर्तव्य होता है ।

हम अपनी आँखों से जिस संसार व इसमें सूर्य, चन्द्र, पृथिवी, ग्रह व उपग्रहों सहित तारों आदि को देखते हैं, पृथिवी पर अग्नि, वायु, जल, आकाश तथा समुद्र, नदी, झरने, पर्वत, रेगिस्तान, मनुष्य, पशु व पक्षी आदि प्राणियों, वृक्षों, वनस्पतियों आदि को देखते हैं, इन सबको भी परमात्मा ने ही बनाया है। यह पदार्थ अपौरुषेय

कहलाते हैं अर्थात् इनकी रचना व उत्पत्ति मनुष्यों के द्वारा नहीं हो सकती। इनकी रचना व उत्पत्ति सब मनुष्यों से महान सत्ता परमात्मा द्वारा होती है। जो कार्य मनुष्य नहीं कर सकता परन्तु सृष्टि में वह हमें दृष्टिगोचर होता है, वह अपौरुषेय रचनायें कहलाती हैं जिनकी रचना व पालन परमात्मा के द्वारा किया जाता है।

हमारी इस सृष्टि को बने हुए 1 अरब 96 करोड़ वर्ष हो चुके हैं। अभी 2 अरब 36 करोड़ वर्षों का समय इस सृष्टि का भोग व इसका अस्तित्व बना रहने का काल है। इसके बाद इसकी प्रलय होगी। सृष्टि की प्रलय भी परमात्मा के द्वारा होती है। सृष्टि का काल दिन के समान तथा प्रलय का काल रात्रि के समान होता है। इसे ईश्वर का एक दिन भी कहा जाता है। सृष्टि रचना व सृष्टि संवत् विषयक गणनायें वैदिक साहित्य में उपलब्ध होती हैं जो हमारे प्राचीन ऋषियों महर्षियों के अनुसंधानों का परिणाम है। उनके सभी सिद्धान्त भी सृष्टि में ठीक-ठीक घट रहे हैं। सभी ऋषि सृष्टि रचना आदि कार्यों के द्रष्टा व इसे यथार्थ रूप में जानने वाले होते थे। यह ज्ञान उन्हें वेदों के स्वाध्याय तथा योग, ध्यान व समाधि आदि को सिद्ध करने पर प्राप्त होता था। अतः किसी भी व्यक्ति को वेद एवं ऋषियों के ग्रन्थों में शंका नहीं करनी चाहिये। वेद परमात्मा से उत्पन्न व परमात्मा प्रदत्त ज्ञान है जिसे परमात्मा ने सृष्टि की आदि में चार ऋषियों अग्नि, वायु, आदित्य तथा अंगिरा को उनमें सर्वान्तर्यामी स्वरूप से उपस्थित होने से उनकी आत्माओं में प्रेरणा करके प्रदान किया था। सृष्टि के आरम्भ से ही वेद मानवजाति को उपलब्ध रहे हैं। वेदों का अध्ययन व स्वाध्याय करना तथा उसकी शिक्षाओं के अनुसार आचरण करना सभी मनुष्यों का कर्तव्य व परम धर्म होता है। जो इस शिक्षा का पालन करते हैं वह जीवन में उन्नति करते हुए सुखों को प्राप्त करते हैं तथा परजन्म में भी उन्हें ईश्वर की व्यवस्था से सुख प्राप्त होते हैं। अतः सबको वेदों की शरण लेकर सत्य ज्ञान को प्राप्त होकर व अपने-अपने कर्तव्यों वा धर्म का पालन करते हुए अपने जीवन की उन्नति व सुखों की प्राप्ति करनी चाहिये।

परमात्मा ने पृथिवी आदि सृष्टि क्यों बनाई? इसके अनेक कारण हैं। इसका एक कारण तो परमात्मा का सच्चिदानन्दस्वरूप, अनादि, नित्य, निराकार, सर्वज्ञ सर्वशक्तिमान, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी तथा सृष्टिकर्ता होना है। परमात्मा सृष्टि बना सकता है, बनाना जानता है, इस सृष्टि से पूर्व अनन्त बार ऐसी ही सृष्टि को बनाया है, जीवों को मनुष्य व इतर योनियों में जन्म व मरण धारण करने के लिये इस सृष्टि की आवश्यकता भी है, तो परमात्मा सृष्टि को क्यों न बनाता? इस प्रश्न का उत्तर नहीं मिलता। मनुष्य इस विषय में तरह-तरह की शंकायें कर सकता है जिसका उत्तर ऋषि दयानन्द ने अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश में दिया है।

सृष्टि रचना पर प्रकाश डालते हुए ऋषि दयानन्द ने सांख्य दर्शन के सूत्रों को उद्धृत कर उनके अर्थों पर प्रकाश डाला है। वह सत्यार्थप्रकाश के अष्टम समुल्लास में लिखते हैं कि (सत्व) शुद्ध (रजः) मध्य (तमः) जाड्य अर्थात् जड़ता इन तीन वस्तुओं से मिलकर जो एक संघात है उस का नाम प्रकृति है। उस से महतत्व बुद्धि, उससे अहंकार, उससे पाँच तन्मात्रा सूक्ष्म भूत और दश इन्द्रियाँ तथा ग्यारहवां मन, पाँच तन्मात्राओं से पृथिव्यादि पाँच भूत ये चौबीस और पच्चीसवां पुरुष अर्थात् जीव तथा (छब्बीसवां) परमेश्वर है। इन सब विकारों में प्रकृति

अविकारिणी है और महत्तत्व अहंकार तथा पाँच सूक्ष्म भूत प्रकृति के विकार हैं। प्रकृति इस कार्य जगत का उपादान कारण है। यह मूल अनादि तत्व प्रकृति किसी अन्य पदार्थ का कार्य नहीं हैं। जीव व ईश्वर भी किसी मूल पदार्थ का विकार न होकर स्वयंभू सत्तायें जिनका अस्तित्व अनादि काल से स्वत: वा स्वमेव है।

ऋषि दयानन्द ने जगत की उत्पत्ति में सहयोगी तीन प्रमुख कारणों का उल्लेख कर उनकी व्याख्या की है। वह कहते हैं एक निमित्त कारण, दूसरा उपादान कारण तथा तीसरा साधारण कारण होता है। निमित्त कारण उस को कहते हैं कि जिसके बनाने से कुछ बने, न बनाने से न बने, आप स्वयं बने नहीं, दूसरे को प्रकारान्तर कर बना देवे। दूसरा उपादान कारण उस को कहते हैं जिस के बिना कुछ न बने। वही अवस्थान्तर रूप होके बने बिगड़े भी। तीसरा साधारण कारण उस को कहते हैं कि जो बनाने में साधन और साधारण निमित्त हो।

ऋषि दयानन्द जी बताते हैं कि निमित्त कारण दो प्रकार के होते हैं। एक- सब सृष्टि को मूल कारण प्रकृति से बनाने, धारने और प्रलय करने तथा सब की व्यवस्था रखने वाला मुख्य निमित्त कारण परमात्मा। दूसरा-परमेश्वर की सृष्टि में से पदार्थों को लेकर अनेक विधि कार्यान्तर बनाने वाला साधारण कारण जीव अर्थात् मनुष्य।

उपादान कारण पर प्रकाश डालते हुए ऋषि दयानन्द बताते हैं कि प्रकृति, परमाणु जिसको सब संसार के बनाने की सामग्री कहते हैं, वह जड़ होने से आप से आप न बन और न बिगड़ सकती है किन्तु दूसरे के बनाने से बनती और बिगाड़ने से बिगड़ती है। कहीं-कहीं जड़ के निमित्त से जड़ भी बन और बिगड़ भी जाता है। जैसे परमेश्वर के रचित बीज पृथिवी में गिरने और जल पाने से वृक्षाकार हो जाते हैं और अग्नि आदि जड़ के संयोग से बिगड़ भी जाते हैं परन्तु इनका नियमपूर्वक बनना और वा बिगड़ना परमेश्वर और जीव के आधीन है।

जब कोई वस्तु बनाई जाती है तब जिन-जिन साधनों से अर्थात् ज्ञान, दर्शन, बल, हाथ और नाना प्रकार के साधन और दिशा, काल और आकाश आदि को साधारण कारण कहते हैं। जैसे घड़े को बनाने वाला कुम्हार निमित्त, मिट्टी उपादान और दण्ड चक्र आदि सामान्य निमित्त, दिशा, काल, आकाश, प्रकाश, आँख, हाथ, ज्ञान, क्रिया आदि निमित्त साधारण और निमित्त कारण भी होते हैं। इन तीन कारणों के विना कोई भी वस्तु नहीं बन सकती और न बिगड़ सकती है। इसी प्रकार से, परमात्मा इस सृष्टि की रचना करते हैं।

परमात्मा सृष्टि रचना वा उत्पत्ति का मुख्य निमित्त कारण है और प्रकृति उपादान कारण है। जीव इस कार्य प्रकृति वा सृष्टि के भोक्ता हैं जिनके लिये इस सृष्टि को बनाया गया है। सृष्टि रचना का यही वर्णन सत्य विज्ञान से युक्त हैं। हम आशा करते हैं कि यदि वैज्ञानिक वेदों को पढ़ेंगे, समझेंगे व जानेंगे तो उन्हें ईश्वर के द्वारा सृष्टि वा पृथिवी आदि की रचना में किसी प्रकार की भ्रान्ति दृष्टिगोचर नहीं होगी।

ऋग्वेद में वर्णन है कि यह सब जगत् सृष्टि के पहले प्रलय में अन्धकार से आवृत व आच्छादित था। प्रलयारम्भ के पश्चात् भी वैसा ही होता है। उस समय यह जगत न किसी के जानने, न तर्क में लाने और न प्रसिद्ध चिन्हों से युक्त इन्द्रियों से जानने योग्य था किन्तु वर्तमान में जाना जाता है और प्रसिद्ध चिन्हों से युक्त जानने योग्य होता है और यथावत् उपलब्ध है। वेदों में सृष्टि विषयक यह वर्णन युक्ति, तर्क एवं विज्ञान

के अनुरूप है।

ईश्वर ने पृथिवी व लोक-लोकान्तरों से युक्त सृष्टि को बनाया है। उसका सृष्टि को बनाने का प्रयोजन है। इस पर लेख के आरम्भ में सृष्टि के प्रयोजन पर विचार प्रस्तुत किये हैं। कुछ लोग कहते हैं कि ईश्वर यदि सृष्टि को न बनाता तो आनन्द में रहता और जीवों को भी सुख, दु:ख प्राप्त न होता। इसका उत्तर देते हुए ऋषि दयानन्द ने सत्यार्थप्रकाश में लिखा है कि यह आलसी और दरिद्र लोगों की बातें हैं। पुरुषार्थी लोगों की नहीं और जीवों को प्रलय में क्या सुख वा दु:ख है? सृष्टि के सुख दु:ख की तुलना की जाय तो सुख कई गुना अधिक होता और बहुत से पवित्रात्मा, जीव मुक्ति के साधन कर मोक्ष के आनन्द को भी प्राप्त होते हैं। प्रलय में निकम्मे जैसे सुषुप्ति में जीव पड़े रहते हैं वैसे रहते हैं और प्रलय के पूर्व सृष्टि में जीवों के किये पाप-पुण्य कर्मों का फल ईश्वर कैसे दे सकता और जीव क्यों-कर भोग सकते?

ऋषि इसके उत्तर में कहते हैं कि यदि तुम से कोई पूछे कि आँख के होने में क्या प्रयोजन है? तुम यही कहोगे देखना, तो जो ईश्वर में जगत् की रचना करने का विज्ञान, बल और किया है उस का क्या प्रयोजन, बिना जगत की उत्पत्ति करने के? दूसरा कुछ भी न कह सकोगे। और परमात्मा के न्याय, धारण, दया आदि गुण भी तभी सार्थक हो सकते हैं जब वह जगत् को बनाये। उस का अनन्त सामर्थ्य जगत् की उत्पत्ति, स्थिति, प्रलय और व्यवस्था करने ही से सफल होता है। जैसे नेत्र का स्वाभाविक गुण देखना है वैसे परमेश्वर का स्वाभाविक गुण जगत् की उत्पत्ति करके सब जीवों को असंख्य पदार्थ देकर परोपकार करना है। ऋषि के यह उद्‌गार सृष्टि की रचना का सत्य चित्र प्रस्तुत करते हैं जिसे पढ़कर जिज्ञासु की आत्मा सन्तुष्ट व प्रसन्न होती है।

हमने पृथिवी सहित सभी लोक-लोकान्तरों से युक्त सृष्टि रचना का वैदिक सिद्धान्त प्रस्तुत किया है। यही सृष्टि की उत्पत्ति का सत्य सिद्धान्त है। पाठक इसे पढ़ें और इससे लाभ उठाये। इसे मानने से हमारा जीवन उन्नति को प्राप्त होकर हमारे परजन्म में भी उन्नति होना निश्चित है। ओ३म् शम् । ❑❑

हादसों पर हादसे हैं? (पृष्ठ १४ का शेष)

में मैं पला-बढ़ा, मेरा पालन हुआ व आगे भी होगा; जहाँ की पुलिस सेना मेरे जान-माल की रक्षा करती है; जहाँ के चिकित्सालयों में मुझे स्वास्थ्य लाभ मिलता है; जहाँ के यातायात के साधन मुझे गन्तव्य तक पहुँचाते हैं, कम से कम मेरे लिए तो वह देश संसार का सिरमोर है । यदि उसमें कुछ कमी है, तो उसे दूर करना व समृद्ध बनाना मेरा कर्तव्य है ।

मुझे पता है कि मेरे पूर्वजों की कुछ गलतियों के कारण मेरा देश सैकड़ों वर्ष विदेशियों के अधीन रहा । जिसके कारण यहाँ के लोगों का अर्थिक, सामाजिक धार्मिक व राजनैतिक दृष्टि से पतन हुआ और स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद योग्य नेतृत्व के अभाव के कारण अभी तक भी अपेक्षित सुधार नहीं हुआ है, पर अन्धेरे का शोर मचाने से अन्धेरा दूर नहीं होगा, छोटा दीपक जलाना भी श्रेयस्कर होता है । क्योंकि–

हादसों पर हादसे हैं, सावधानी क्या करे,
इस भयंकर आग में, दो चुल्लू पानी क्या करे?
जनता की भी तो कोई जिम्मेदारी होती होगी,
आप ही बताएं अकेली राजधानी क्या करे?
❑❑

सच्चे आदमी का चरित्र चित्रण–

स्टेशन मास्टर लाला गंगाराम

–स्वामी स्वतन्त्रतानन्द जी महाराज

आचार की दृष्टि से अपने स्वभाव में कट्टरपन की दृष्टि से और अपने नियमों पर अटल रहने की दृष्टि से लाला गंगाराम जी विशेष व्यक्ति थे। इसलिए उनके जीवन की कुछ घटनाएं लिखता हूँ। सम्भव है कोई सज्जन इनसे लाभ प्राप्त करें।

(१) लाला गंगाराम जी सहायक स्टेशन मास्टर थे। स्टेशन मास्टर अंग्रेज था। लाला जी जिला गुजरांवाला के कानेवाली ग्राम के निवासी थे। जिस समय की यह घटना है। उनकी माता का स्वर्गवास हो गया। वह स्टेशन मास्टर से पूछकर अपने ग्राम चले गए। दैवयोग से उसी दिन एक रेलवे का अफसर आ गया। उसने और बातों के साथ-साथ यह भी पूछा कि लाला गंगाराम जी कहाँ हैं ? स्टेशन मास्टर ने उस दिन उनकी हाजिरी लगा दी थी इसलिए कहा–यहाँ ही हैं। कहीं इधर-उधर होंगे। बात समाप्त हो गई। दूसरे दिन अपने ग्राम से आ गए; तब उस अफसर ने इनसे पूछ लिया, कि आप नहीं मिले, कहाँ गए थे? इन्होंने उत्तर दिया, मेरी माता का स्वर्गवास हो गया था, इसलिए मैं ग्राम गया हुआ था: यहाँ न था। उसने कहा, स्टेशन मास्टर जी तो कह रहे थे कि आप यहाँ ही हैं। इन्होंने उत्तर दिया कि, उन्होंने मेरे बचाव के लिए ऐसा कह दिया था; वास्तव में मैं अपने घर गया हुआ था। वह अफसर इनका सत्य वचन सुनकर बड़ा प्रसन्न हुआ।

(२) एक बार लाला गंगाराम जी से लाइन क्लियर देने में विशेष भूल हो गई। जब उसका पता लगा, तो लाला जी से वक्तव्य माँगा गया। स्टेशन मास्टर ने इन्हें उत्तर लिखित देने को कहा। इन्होंने चार दिन पीछे लिखकर दिया कि मुझ से भूल हो गई। इस भूल के कारण दुर्घटना हो सकती थी। दुर्घटना नहीं हुई तो रेल यात्रियों के सौभाग्य के कारण नहीं हुई। अत: इस भूल से मुझे जो दण्ड दिया जाये, मैं प्रसन्नता से स्वीकार करूँगा। जब स्टेशन मास्टर ने उसे पढ़ा, तो इनसे कहा कि क्या नौकरी छोड़ने की अभिलाषा है? इन्होंने उत्तर दिया–कि नहीं। तब उसने समझाया और कहा कि कुछ और लिखकर लाओ।

वह कागज ले गये। तीन दिन पश्चात् वही लाकर पुन: दे दिया। स्टेशन मास्टर ने कहा, यह तो पूर्व वाला ही उत्तर है। लाला जी ने कहा कि सत्य यही है; अत: यह उत्तर ठीक है। झूठ कैसे लिखूँ? स्टेशन मास्टर ने वही उत्तर भेज दिया। ऊपर से आज्ञा मिली कि गंगाराम को चेतावनी दे दो कि आगे ऐसी भूल न करें। स्टेशन मास्टर तथा अन्य रेल कर्मचारी आश्चर्यवन्त थे कि यह क्या हुआ। अपराध स्वीकार करने पर केवल चेतावनी दी गयी। उस अधिकारी से किसी ने पूछा कि आप छोटे-छोटे अपराधों पर अधिक दण्ड दे देते हैं, परन्तु लाला गंगाराम ने अपराध किया और इन्होंने स्वीकार भी कर लिया, तब भी आपने चेतावनी देकर छोड़ दिया। उसने उत्तर दिया कि मुझे ऐसा व्यक्ति कभी मिला ही नहीं। उसने अपना अपराध स्वीकार किया, उसका कारण अपनी भूल बताई और उसका दण्ड लेने के लिए तैयार हो गया। लोग अपराध करते हैं, पुन: उसे न मानकर झूठ बोलते हैं। गंगाराम ने सत्य कहा, अत: उसे कोई विशेष दण्ड न दिया गया भूल सबसे हो सकती है। उससे भी हुई।

सद्व्यवहार–

(३) लाला गंगाराम जी बदली किला अब्दुल्लापुर

(बिलोचिस्तान) हो गई। वहाँ से फलों के टोकरे बाहर भेजे जाते थे। दस्तूरी का चलन वहाँ भी था, फलों वाले जब दस्तूरी देना चाहें तो यह न लें। प्रथम तो उनको सन्देह हुआ कि ये अधिक लेना चाहते हैं। परन्तु जब इन्होंने कहा, मुझे रेलवे से वेतन मिलता है उसी से मुझे वह काम करना होता है। आप जिसे दस्तूरी कहते हैं, वह रिश्वत है। तब वह चुप हो गए। एक बार स्वर्गीय पंडित विश्वम्भरनाथ आदि वहाँ आ गए। इनके पास ठहरे। एक दिन वे एक ग्राम में फल खाने चले गए। बागवान से फल लेकर खाते रहे। उस बिलोच ने इनसे पूछा, आप यहाँ कैसे आए हैं? इन्होंने उत्तर दिया—लाला गंगाराम जी स्टेशन मास्टर के पास आये हुए हैं। जब फलों से पेट भरकर ये उसे फलों का दाम देने लगे तो उसने दाम लेने से इन्कार कर दिया और बलपूर्वक कहा, जब स्टेशन मास्टर दस्तूरी तक भी नहीं लेता, तो मैं उसके मित्रों से फलों का दाम लूँ, यह उचित बात नहीं। आप प्रतिदिन इस बाग से जो फल चाहें, आकर खाया करें, आप से कुछ दाम न लिया जाएगा। आप जैसे गंगाराम के मित्र हैं, वैसे ही हमारे भी मित्र हैं।

(४)उसी स्टेशन पर एक बार एक अंग्रेज रेलवे अफसर आया हुआ था, और वह प्रतीक्षा-गृह (waiting room) में ठहरा हुआ था। दैवयोग से उस समय एक पुरुष और एक स्त्री अर्थात् पति-पत्नी जो बिलोच थे। वो सैकंड क्लास का टिकट लेकर जब प्रतीक्षा गृह में गए तो अंग्रेज ने उन्हें वहाँ घुसने न दिया। गंगाराम ने उस अंग्रेज से कहा कि यह प्रतीक्षा गृह है और प्रथम और द्वितीय दर्जे के यात्रियों के लिए है। आप इसे खाली कर दें। वह न माना, इन्होंने पुलिस द्वारा उसका सामान बाहर रखवा कर उस दम्पत्ति को ठहराया। उसके पश्चात् एक बार इन्हें सूचना मिली कि इधर डाकू आए हुए हैं, आप सावधान रहें। उस दिन किला अब्दुल्ला पर कुछ न हुआ, एक और स्टेशन को डाकुओं ने लूटा। तदनन्तर गाजियों का एक नेता पकड़ा गया। जब उसे रेल में ले जा रहे थे उसने इच्छा प्रकट की कि मैं किला अब्दुल्ला के स्टेशन मास्टर से मिलना चाहता हूँ। पुलिस वालों ने स्टेशन आने पर लाला जी से कहा, वे आ गए। वह पठान बड़ी श्रद्धा से मिला और कहा कि लाला जी, आप निश्चिन्त रहें। जहाँ आप होंगे, वहाँ कोई गाजी या डाकू, जो पठान है, आपको कुछ न कहेगा। उस दिन हम आपके पास अमुक स्थान पर बैठे रहे। पुलिस वालों ने कहा, खान साहिब, लाला जी में क्या बात है? उसने कहा कि ये देवता हैं। इन्होंने सैकण्ड क्लास टिकट वाले पठान को स्थान दिलाया। ये गरीबों के सहायक हैं, इसलिए हमने निश्चय कर लिया है कि जहाँ ये होंगे, इनकी रक्षा की जायेगी। सब पठान इनके दोस्त हैं।

मित्रता—

(५) जब लाला जी वजीराबाद में थे, उस समय गुजरांवाला में धर्मपाल जी आर्य बने। उस समय कालेज में पढ़ने वाले कई विद्यार्थियों ने उस शुद्धि में भाग लिया था। उनमें से एक के पिता ने रुष्ट होकर उससे कहा कि आप हरिद्वार जाकर प्रायश्चित करें। अन्यथा हम व्यय नहीं देंगे और आप गृह पर न आवें। इस बात की सूचना इनको दी गई, इन्होंने उस विद्यार्थी से कहा कि आप पढ़ते रहें, आपका सारा व्यय मैं दूँगा। जब इस प्रकार कई मास व्यतीत हो गए, तब उसके पिता ने पता लिया कि लड़का निर्वाह कैसे करता है। जब इन्हें पता चला तो गंगाराम जी के पास आया और कहा कि आप लड़के को कहें कि गृह पर आ जाये। आर्यसमाजी अच्छे होते हैं, हमारा लड़का आर्यसमाजी हो गया तो ठीक ही है। तब उनके पिता और उस विद्यार्थी का पूर्ववत् मिलाप हो गया और अपनी इच्छानुसार पढ़ते रहे।

दृढ़ता—

(६) क—जब वह पठानकोट स्टेशन पर थे

उस समय आर्यसमाज मन्दिर बनवाया। उस स्थान पर जो थानेदार थे, वो बिना टिकट रेल पर आए, लाला जी ने उनसे टिकट के पैसे प्राप्त किये जब कि वो जानते थे कि यह थानेदार है।

ख--एक बार एक अंग्रेज रेलवे अफसर आया उसके पास एक कुत्ता था, गंगाराम जी ने कहा कि कुत्ते का पास वा टिकट दो। उसने कहा कि मैं रेलवे में ही काम करता हूँ। लाला जी ने कहा मैं जानता हूँ कि आपके पास पास है, किन्तु कुत्ते का किराया माँगता हूँ, आपका नहीं। अन्त में उसे कुत्ते का किराया देना ही पड़ा। पहले थानेदार ने शिकायत कर दी कि यह आर्यसमाजी है, लाला लाजपतराय जी का साथी है। इन सब कारणों से बिलोचिस्तान बदल दिये गए।

(ग)–किला अब्दुल्ला में एक बार सीनियर सुपरिन्टेन्डैन्ट की धर्मपत्नी अपनी सहेलियों सहित आ गई। इन्होंने टिकट माँगा उसने कहा जाते समय दे जाऊंगी, वह सायंकाल बिना टिकट दिये चली गई। इन्होंने रिपोर्ट कर दी। उस समय श्री ज्ञानचन्द मेहता और श्री गणेशदास जी विज वहाँ पुलिस में थे। इन्होंने गंगाराम से कहा, आपको बदल कर यहाँ भेजा, यहाँ भी आप वैसे ही काम करते हैं। इन्होंने उत्तर दिया–आप लिखकर दिला दें, इनसे टिकट न लिया जाये, मैं न माँगूंगा यह धन मेरी जेब में तो जाता नहीं, रेलवे कोष में जाता है।

(घ)–एक इनके परिचित अंग्रेज ने (जो किसी काम पर आगे जा रहा था) इन्हें समाचार-पत्र चिह्न लगा कर दिया, जहाँ आर्यसमाज के विरुद्ध लेख था। इन्होंने उसे पढ़ा और जब वह लौटकर आया तो अंग्रेज को आर्य पत्रिका के कुछ अंक चिह्न लगाकर दिये, आर्यसमाज की सत्यता प्रकट करते थे। इन्हें पढ़कर वह लाला जी का भक्त बन गया। इनके असली रूप को समझ गया।

(इ)–एक स्पेशल ट्रेन में रेलवे अफसर उधर गए। जब रेलगाड़ी किला अब्दुल्ला ठहरी तो एजेन्ट साहिब ने पूछा, गंगाराम क्या हाल हैं? इन्होंने उत्तर दिया ठीक हैं। उसने कहा–कहाँ जाना चाहते हो? इन्होंने कहा कंधार में लाइन बना दो वहाँ जाऊंगा। उसने कहा हम तुम्हें पंजाब भेजना चाहता है। ये बोले, आर्यसमाजी होने से मुझे पंजाब से यहाँ भेजा था, अब तो मैं पहले से भी अधिक आर्यसमाजी हूँ। पर आप मानते हैं (Yes. we want arya Samajist for that place) (हां हम उस स्थान के लिए आर्यसमाजी ही चाहते हैं।) तब वो अमृतसर स्टेशन पर बदल दिये गए।

इनके काम से प्रसन्न होकर अमृतसर का माल उतारने और चढ़ाने का ठेका भी इन्हें ही दिया गया था।

(७)–एक बार लाहौर के आर्यसमाजी, जिन में इनके सुपुत्र लाला फकीरचन्द जी, स्वर्गीय पं० भूमानन्द जी, पं० परमानन्द जी आदि अनेक सज्जन थे, गुरुकुल कांगड़ी जा रहे थे। अमृतसर स्टेशन पर एक अंग्रेज रेल अफसर उस डिब्बे में और आदमी बिठाने लगा। वहाँ प्रथम ही भीड़ थी। भूमानन्द जी ने विरोध किया, उसने भूमानन्द को उतार दिया। लाला जी को सूचना दी गई, ये आ गए। यह गाड़ी तो चली गई, इन्होंने भूमानन्द जी की जमानत करवाकर फ्रंटियर मेल से उन्हें भेज दिया, वो सहारनपुर अपने साथियों से जा मिले। दोनों पक्षों ने अभियोग किया, जिस समय उस अफसर को पता लगा कि इस अभियोग में लाला गंगाराम जी साक्षी होंगे, वह इनके पास आया और कहा कि मेरा उनसे समझौता करा दो क्योंकि अमृतसर में सब आपको सत्यवक्ता जानते हैं। आपकी साक्षी से वह दोषी सिद्ध न होकर मैं ही दोषी बनूँगा। इन्होंने समझौता करवा दिया। देश-वासियों को लाला गंगाराम जी की जीवन की घटनाएं पढ़कर उन पर विचार करना चाहिए। जैसे कि वो थे वैसे ही दृढ़ आर्य, सत्यवक्ता तथा कर्तव्य पालक बनने का प्रयत्न करना चाहिए।

प्रस्तुति : डॉ० विवेक आर्य

आर्यावर्त की सीमा

–स्वामी ओमानन्द सरस्वती

आसमुद्रात्तु वै पूर्वादासमुद्रात्तु पश्चिमात् ।
तयोरेवान्तरं गिर्योरार्यावर्त्तं विदुर्बुधाः ॥
(मनु० २।२२।।)

सरस्वतीदृषद्वत्योर्देवनद्योर्यदन्तरम् ।
तं देवनिर्मितं देशमार्यावर्त्तं प्रचक्षते ॥२॥
(मनु० २।१७।।)

उत्तर में हिमालय, दक्षिण में विन्ध्याचल, पूर्व और पश्चिम में समुद्र ।।१।। तथा देव नदी सरस्वती, पश्चिम में अटक नदी, पूर्व में दृषद्वती जो नेपाल के पूर्वभाग पहाड़ से निकल के बंगाल व आसाम के पूर्व और ब्रह्मा के पश्चिम की ओर होकर दक्षिण के समुद्र में मिली है, जिसको ब्रह्मपुत्रा कहते हैं, जो उत्तर के पहाड़ों से निकल के दक्षिण के समुद्र की खाड़ी में आकर मिली है । हिमालय की मध्यरेखा से दक्षिण और पहाड़ों के भीतर तथा रामेश्वर पर्यन्त विन्ध्याचल के भीतर जितने प्रदेश हैं, उन सबको आर्यावर्त्त इसलिए कहते हैं कि आर्य अर्थात् देव विद्वानों ने बसाया और आर्यजनों के निवास करने से आर्यावर्त्त कहलाता है । आर्यावर्त्त–भारत के असली निवासी आर्य लोग ही हैं । जो विदेशी इतिहासकार लिखते हैं कि मध्य एशिया या ईरान से आकर आर्य भारत में बसे हैं, यह सर्वथा मिथ्या है, इसका कोई प्रमाण नहीं ।

यदि आर्य लोग बाहर से आकर भारत में बसे हैं तो उन के आने से पूर्व इसका कोई और नाम होना चाहिए । आर्यों के यहाँ आने से पूर्व का इस देश का नाम बताने का कोई साहस तो करे । तीन काल में भी कोई नहीं बता सकता।

यथार्थ बात यह है कि भारत भूमि के एक प्रदेश तिब्बत में ही मनुष्यों की उत्पत्ति हुई और वहाँ से चलकर शेष सारे आर्यावर्त को बसाने वाले आर्य लोग ही हैं । इसीलिए इसका नाम आर्यावर्त्त है ।

कौल, भील, द्रविड आदि जातियों को जो लोग भारत के आदिवासी बताते हैं और आर्यों को बाहर से आया हुवा लिखते हैं, यह सब विदेशियों की धूर्तता है क्योंकि वे स्वयं विदेशी थे और आर्यों को विदेशी बताकर यह सिद्ध करना चाहते थे कि तुम भी विदेशी, हम भी विदेशी, फिर तुम आर्य लोग इसे अपना देश बताकर स्वराज्य क्यों माँगते हो । हम अंग्रेजों की अपेक्षा भारत पर तुम्हारा कोई अधिकार नहीं । यह हीन भावना उत्पन्न करके भारतीयों को सदा के लिए अपना दास रखना चाहते थे । यह उनका बहुत बड़ा षड्यन्त्र था और इसमें भारत के सभी पढ़े-लिखे लोग फंस गये और अपने ही घर में अपने को विदेशी मान बैठे और सभी इतिहास भूगोल की पुस्तकों में यह पढ़ाने लगे कि आर्य लोग बाहर से आये हुए विदेशी हैं । और दु:ख तो यह है कि स्वराजय प्राप्ति के पश्चात् आज २१ वर्ष हो गये फिर भी यही पढ़ाया जा रहा है ।

(यह महत्त्वपूर्ण लेख जिस पुस्तक से उद्धृत है वह पूज्य स्वामी जी महाराज ने ५४ वर्ष पूर्व लिखी थी और दुर्भाग्य ये है कि आज ७५ वर्ष की आजादी के उपरान्त भी यही असत्य पढ़ाया जा रहा है । –दिनेश कु० शास्त्री)

इस युग के महापुरुष जगद्गुरु महर्षि दयानन्द जी महाराज क्रान्तिकारी थे जिन्होंने डंके की चोट

में यह लिखा तथा अपने उपदेशों में भी बार-बार यह कहा है कि आर्यावर्त्त देश आर्यों का बसाया हुवा है । ये ही इसके आदिवासी हैं और सृष्टि के आदि से ये ही आज तक यहाँ बसते आये हैं । कुछ इतिहासकार स्वामी दयानन्द के नाम से उपर्युक्त सत्य को अपने ग्रन्थों में लिखने का साहस करने लगे हैं । जो विदेशी इतिहासकार तथा उनके भारतीय शिष्य द्रविड, भील आदि जंगली जातियों को भारत के आदिवासी बताते हैं तथा आर्यों को विदेशी कहते हैं वे यह नहीं जानते कि द्रविडादि जातियाँ भी आर्यों की ही सन्तान हैं । उनके पतित होने का कारण मनु जी महाराज ने इस प्रकार लिखा है–

शनकैस्तु क्रियालोपादिमाः क्षत्रियजातयः ।
वृषलत्वं गता लोके ब्राह्मणादर्शनेन च ॥

(मनु० १०।४३)

पौण्ड्रकाश्चौड्रद्रविडाः काम्बोजा यवनाः शकाः।
पारदाः पह्लवाश्चीनाः किराता दरदाः खशाः॥

(मनु० १०।४४)

किसी संस्कृत ग्रन्थ में वा इतिहास में नहीं लिखा कि आर्य लोग ईरान से आये और यहाँ के जंगलियों से लड़कर उन्हें जीत तथा निकालकर इस देश के राजा हुए । पुनः विदेशियों का लेख माननीय कैसे हो सकता है ? ये निमनलिखित क्षत्रिय जातियाँ यजन-याजन, अध्ययन-अध्यापन आदि धार्मिक क्रियाओं के लोप होने से धीरे-धीरे शूद्रता को प्राप्त हो गई । इसका मुख्य कारण ब्राह्मणों (गुरुओं) के न मिलने से धार्मिक शिक्षा से वञ्चित होना था । जैसे–द्रविड, काम्बोज, यवन, शक, पारद, पह्लव, चीन, किरात, दरद और खश आदि ।

इससे स्पष्ट सिद्ध होता है कि इन जातियों के पूर्वज सब आर्य क्षत्रिय थे । केवल सच्चे गुरुओं के न मिलने से ये शूद्र बन गये । जो अनाड़ी मूर्ख हो उसे ही शूद्र कहते हैं । विदेशी धूर्तों ने आर्यों को विदेशी तथा इन द्रविड़ों को यहाँ के आदिवासी बताकर सदा के लिए इनके मध्य एक भित्ति खड़ी कर डाली जिससे भारत के लोग परस्पर झगड़ते रहें और अंग्रेजों का राज्य भारत पर सदा बना रहे । फूट डालो और राज्य करो इस नीति को अपनाकर भारत को वे अपना दास रखना चाहते थे । किन्तु पाँच सहस्र वर्ष पश्चात् एक महान् क्रान्तिकारी महर्षि दयानन्द आये, जिस निर्भीक संन्यासी ने निर्भय हो इनकी पोल खोल डाली और अंग्रेजी राज्य की जड़ को बारूद का पलीता लगा दिया जिससे विदेशी राज्य का गला-सड़ा वृक्ष भस्मसात् हो धड़ाम से गिर पड़ा और इन विदेशी लुटेरों को यहाँ से भागना पड़ा। इसलिये महर्षि दयानन्द को अंग्रेजों ने अपने गुप्त पत्रों में बागी फकीर लिखा और उनको विष देकर मरवाने का षड्यन्त्र स्वयं अंग्रजों ने किया । ऐसा अब इतिहास लेखक मानने लगे हैं ।

उपर्युक्त प्रमाणों से यह सिद्ध होता है कि आर्य ही इस आर्यावर्त्त देश के निवासी हैं और द्रविड, भील, किरात आदि इन्हीं की सन्तान हैं। इनमें कोई विदेशी नहीं है । इन सब के पूर्वज आर्य ही हैं । यह ठीक है कि आर्यों की सन्तान विदेशों में भी गई और वहाँ पर जाकर बस गई । जैसे ईरान के लोग आर्यों की सन्तान हैं, उनकी स्त्रियाँ घाघरा पहनती हैं जो भारतीय स्त्रियों का पहनावा है । स्त्रियाँ अपनी वेश-भूषा को बड़ी देर से छोड़ती हैं । इसी कारण अब तक ईरान में देवियों की वेश-भूषा भारतीय ढंग की है ।

खलीफा हारूरशीद पर किसी शत्रु ने चढ़ाई कर दी थी । उस समय भारत के सिन्ध राजाओं से उन्होंने शत्रु से रक्षार्थ सहायता माँगी । उसकी सहायतार्थ यहाँ से बड़ी भारी सेना गई थी । उसकी सहायता से खलीफा को विजय प्राप्त हुवा । उससे

प्रसन्न होकर खलीफा ने ईरान का राज्य भारतीय सेना के सेनापति को सौंप दिया। वे सेना सहित वहीं बस गये और आज तक अपने गुण, कर्म, स्वभाव भारतीय ढंग के उनमें सुरक्षित हैं। वे गौवों का दूध-घी खाते तथा मल्लयुद्ध (कुश्ती) में बड़ी रुचि रखते हैं और आज भी वे सारे संसार में मल्लविद्या में एक अच्छा स्थान रखते हैं।

सारे अरब देश में क्योंकि मुसलमान हैं और ईरान के लोग भी मुसलमान हैं। मुस्लिम संस्कृति का प्रभाव उनके खान-पान पर पड़े बिना कैसे रह सकता था। उन पर आर्य धर्म वा परम्पराओं का पूर्ण प्रभाव नहीं रहा। मैं स्वयं रूपचन्द जी आर्य पहलवान डामला (हिसार) निवासी के साथ ईरान के प्रसिद्ध पहलवान जो भारत में आधुनिक कुश्ती की शिक्षा देने के लिए आये हुए थे और कई वर्ष तक भारतीय पहलवानों को मल्लविद्या का प्रशिक्षण देते रहे, उनसे मिला तथा बातें कीं। उनके प्रशिक्षण का प्रकार देखा। वे हमारे पहलवानों को प्राचीन व्यायाम पद्धति आसनों के व्यायाम के ढंग से ही व्यायाम सिखाते थे जिस से शरीर में लचकीलापन और स्फूर्ति अधिक आये। ईरान के पहलवानों में इसी व्यायाम पद्धति के कारण तथा गोदुग्ध और गोघृत का ही सेवन करने के कारण हमारे भारतीय पहलवानों की अपेक्षा स्फूर्ति बहुत अधिक है। वे प्रथम पाँच या दस मिनट में जय-पराजय का निर्णय कर डालते हैं तथा अपनी स्फूर्ति के कारण दूसरे पहलवानों को चक्कर में डाल देते हैं। दौर्भाग्य से भारत के पहलवान भैंस के घी दूध का अधिक सेवन करते हैं तथा आसनों के व्यायाम प्रायः नहीं करते, अतः ये कुश्ती में ईरान के पहलवानों के समान चुस्ती नहीं रखते।

रोहतक के कुश्ती दंगल में हमारे तथा ईरान के पहलवानों में एक और अन्तर मैंने अपनी आँखों से देखा। ईरान के पहलवानों में दम नहीं। वे दस मिनट के पीछे हांफने लगते हैं और थक जाते हैं। फिर वे कुश्ती करने में असमर्थ हो जाते हैं। उस समय उनको पराजित करना बड़ा ही सरल हो जाता है। उन को गिराना उस समय बामहस्त का कार्य है। इसका मुख्य कारण उनका माँसाहार है और भारतीय पहलवान विशेषकर हरयाणे के पहलवान प्रायः सभी निरामिष भोजी हैं, गोश्त नहीं खाते। यह सर्वमान्य सत्य है कि गोश्तखोर में दम नहीं होता, वह शीघ्र थक जाता है। जैसे मेहरदीन पहलवान मांसाहारी था। जब उसका मल्लयुद्ध भारत केसरी विजेता हरयाणे के प्रसिद्ध आर्य पहलवान मास्टर चन्दगीराम से हुवा तो मेहरदीन हार गया और ३५ मिनट के संघर्ष में वह इतना थक गया कि अखाड़े में बेहोश होकर गिर पड़ा, स्वयं उठ भी नहीं सका। कुछ मिनट के पश्चात् अन्य पहलवानों ने उसको सहारा दिया। यदि माँस खाने का दोष मेहरदीन पहलवान में न होता तो चन्दगीराम उसको कभी नहीं जीत सकता था, क्योंकि मेहरदीन में तो चन्दगीराम की अपेक्षा एक मौ साठ पौंड भार अधिक था। चन्दगीराम उसके सामने बालक सा लगता था। किसी को भी यह आशा नहीं थी कि वह जीत जायेगा। किन्तु परम्परा से जो आदि सृष्टि से लेकर आज तक पवित्र आहार-विहार और ब्रह्मचर्य, सदाचार की शिक्षा हरयाणे में प्रचलित है उसी में शिक्षित-दीक्षित मा० चन्दगीराम आर्य पहलवान है। न वह माँस अण्डे को छूता है, न तम्बाकू, शराब का सेवन करता है। उसी के फलस्वरूप उसको विजय प्राप्त हुवा और उसने भारत केसरी बनकर भारत का नाम ऊँचा किया। उसकी विजय आर्य संस्कृति की विजय है।

इससे भारतीय पहलवानों को शिक्षा लेनी चाहिये और अपनी पवित्र परम्परा के अनुसार

अपना शुद्ध गोदुग्ध, घृतादि का सात्विक आहार तथा ब्रह्मचर्य पूर्वक जीवन बिताना चाहिए । फिर संसार में सर्वत्र इनका विजय ही होगा । ईरान के पहलवान माँस खाना छोड़ दें तो वे भी संसार के सर्वोच्च स्थान को प्राप्त कर सकते हैं, क्योंकि उनमें प्राचीन भारतीय आर्य ऋषियों का ही रक्त है ।

देश-देशान्तरों और द्वीप-द्वीपान्तरों में जो बस्तियाँ आज देखने में आती हैं वे सभी हमारे पूर्वज आर्यों ने ही बसाई थीं । महाभारत तक तो अनेक ऋषि-महर्षियों का गमनागमन भी भारत से बाहर के देशों में होता रहा । धर्मराज युधिष्ठिर के राजसूय वा अश्वमेध यज्ञ में तथा महाभारत के युद्ध में भाग लेने के लिए प्राय: सभी देशों से राजे-महाराजे आये थे । आदि सृष्टि से महाभारत तक तो हमारे देश का चक्रवर्ती राज्य सारे भूगोल में रहा है । महाभारत युद्ध के पश्चात् सारी व्यवस्था बिगड़ गई । वेद का प्रचार करने वाले दूसरे देशों में नहीं पहुँच सके क्योंकि वेद प्रचारक ऋषियों की परमपरा महाभारत युद्ध के साथ समाप्त हो गई । इसी कारण वेद प्रचार के अभाव में वैदिक मर्यादाओं का लोप होने लगा और आर्यावर्त्त से भिन्न पूर्व दिशा से लेकर ईशान, उत्तर, वायव्य और पश्चिम दिशाओं में रहने वालों का नाम दस्यु, म्लेच्छ तथा असुर हो गया और नैऋति, दक्षिण, दिशाओं में (आर्यावर्त्त से भिन्न) रहने वाले मनुष्यों का नाम राक्षस हो गया । अब देखने से ज्ञात होता है कि हब्शी लोगों का स्वरूप जैसा राक्षसों का वर्णन किया है वैसा ही भयंकर दीख पड़ता है । उपर्युक्त सत्य को हमारे स्मृतिकारों ने इस प्रकार कहा है–

म्लेच्छवाचश्चार्यवाचः सर्वे ते दस्यवः समृताः॥
(मनु० १०।४५)

म्लेच्छदेशस्त्वतः परः ॥ (मनु० २।२३)

इस से यही सिद्ध होता है कि आर्यों की सन्तान जो भारत से बाहर अन्य देशों में बसी, वही ऋषियों वा विद्वानों के सत्संग तथा शिक्षा के अभाव में असुर, दस्यु, म्लेच्छ और राक्षस बन गई । आज यही देखने में आता है, सभी देशों में माँस भक्षण तो प्राय: सभी करते हैं । इस्लामी देशों को छोड़कर मद्य का सेवन भी सभी करते हैं, केवल भारत ही ऐसा देश था जहाँ मुसलमान और अंग्रेजी राज्यकाल से पूर्व सुरापान तथा माँस भक्षण बहुत थोड़ी मात्रा में था । हरयाणा प्रदेश में मद्य-माँस का सेवन न होने के समान ही था। स्वराज्य मिलने से पूर्व तक यथार्थ में यह शुद्ध आर्यों का प्रान्त था । सरकार की अशुद्ध नीति के कारण यहाँ भी अब मद्य-माँस का सेवन बढ़ता जा रहा है ।

• हरयाणा प्रदेश आज से २० वर्ष पूर्व शुद्ध आर्य संस्कृति का प्रत्यक्ष केन्द्र था । इसने अपने पूर्वजों की इस पवित्र धरोहर को, जो आदि सृष्टि से ऋषियों के द्वारा इन्हें प्राप्त हुई, ज्यों का त्यों सुरक्षित रक्खा हुआ था । आज भी महर्षि दयानन्द की दया से आर्यसमाज पवित्र आर्य संस्कृति की रक्षार्थ हरयाणा में कटिबद्ध है । यदि हमारी सरकार के कर्णधारों को परमात्मा सद्बुद्धि प्रदान कर दे तो यह कार्य सरल हो सकता है और यह ब्रह्मर्षि देश सारे विश्व में एक शुद्ध आर्य वैदिक संस्कृति का केन्द्र बन सकता है । जो संस्कृति भगवान् ने सृष्टि के प्रारम्भ में वेद ज्ञान के द्वारा मानव के कल्याणार्थ ऋषियों के हृदय में प्रकाशित की, जिसका प्रचार-प्रसार ऋषियों के आश्रमों द्वारा इसी पवित्र भूमि हरयाणा से सारे संसार में होता रहा, जिसके कारण यह ब्रह्मर्षि देश कहलाया और महर्षि व्यास ने जिसे 'धर्मक्षेत्र' 'पुण्यक्षेत्र' नाम देकर अपने लेखनी को चार चांद लगाये ।

[स्रोत : पुस्तक हरयाणे के वीर योद्धेय से लिया गया]

प्रस्तुतकर्ता : अमित सिवाह

••

साहित्य समीक्षा–

समीक्षक : भवेश मेरजा

- पुस्तक का नाम : अन्तर्जागरण (नव उपनिषदों के कुछ विशेष प्रकरण)
- लेखिका : श्रीमती उत्तरा नेरूर्कर, बैंगलूरु
- प्रकाशक : झेन पब्लिकेशन्स, मुंबई
- संस्करण : प्रथम, मई 2021
- कुल पृष्ठ : 100
- मूल्य : 150 रुपये
- पृष्ठ साइज : 23 से.मी.×15 से.मी. ।

विश्व के उत्कृष्ट साहित्य में उपनिषदों की गणना होती है । आर्यसमाज के प्रवर्तक स्वामी दयानन्द सरस्वती ने ईश, केन, कठ आदि पुरातन उपनिषदों को आर्ष कोटि के ग्रन्थ मानते हुए उन्हें परत: प्रमाण के रूप में स्वीकृत किया है, और गुरुकुलीय पठन-पाठन में उनको यथायोग्य स्थान दिए जाने का निर्देश किया है। न केवल इतना ही, बल्कि अपने सत्यार्थप्रकाश तथा ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका आदि ग्रन्थों में स्व-सिद्धान्तों के प्रतिपादन करने में भी उन्होंने उपनिषदों से सहायता ली है।

आर्यसमाज के कई विद्वानों ने उपनिषदों की व्याख्या करते हुए ग्रन्थ लिखे हैं। इसी क्रम में विदुषी बहिन श्रीमती उत्तरा जी नेरूर्कर का यह हिन्दी ग्रन्थ नवीनतम कड़ी है ।

लेखिका ने इसके पहले भी उपनिषदों को लेकर दो उत्तम ग्रन्थ अंग्रेजी में लिखे हैं :-

1. The Causeless Cause : The Eternal Wisdom of Swetaashwatara Upanishad
   (द कोजलेस कोज-दि इटर्नल विज्डम ऑफ श्वेताश्वतर उपनिषद्) और
2. The Smokeless Fire : Unravelling the Secrets of Isha, Kena and Katha Upanishad
   (द स्मोकलेस फायर अनरिविलिंग द सीक्रेट्स ईश, केन एण्ड कठ उपनिषद्)

ये दोनों ग्रन्थ ऐमैजौन् आदि पर उपलब्ध हैं और पर्याप्त लोकप्रिय सिद्ध हुए हैं ।

अन्तर्जागरण में लेखिका ने कुल 17 प्रकरणों के माध्यम से ईश और माण्डूक्य इन दो को छोड़कर शेष नव प्रमुख उपनिषदों के कुछ चुने हुए महत्त्वपूर्ण स्थलों की सुन्दर विवेचना प्रस्तुत की है, जो न केवल रोचक है, बल्कि बुद्धिगम्य, तार्किक एवं वैदिक तत्त्वज्ञान के अनुकूल है । इसमें इन उपनिषदों की विषयवस्तु का संक्षिप्त परिचय दिया गया है और ऋषियों के चिन्तन को उजागर करते हुए उसकी उत्कृष्टता प्रकाशित की गई है। लेखिका ने इस ग्रन्थ में कई स्थानों पर प्रचलित भाष्यों के अर्थघटन से हटकर तथा ऊहा के बल पर तथा पदों के निर्वचन के आधार पर नवीन अर्थ भी प्रस्तुत किए हैं और इन उपनिषदों के कुछ ऐसे गूढ़ स्थान भी इंगित किए हैं जो समझने में अति दुरूह प्रतीत होते हैं या जिनकी वेद या तर्क संगत व्याख्या करना अपेक्षित है। ग्रन्थ में यथास्थान स्वामी दयानन्द के मत को भी संगृहीत किया गया है और अद्वैत परक प्रतीत होने वाले वाक्यों पर विशेष समालोचना करते हुए वैदिक त्रैतवाद का प्रतिपादन किया गया है ।

आशा है कि उत्तरा जी की इस नवीनतम कृति का आर्यसमाज के क्षेत्र में समादर होगा, जिससे उपनिषत्-कार ऋषियों के वैदिक चिन्तन को समझने में तथा वैदिक तत्त्वज्ञान के प्रचार प्रसार में सहायता मिलेगी।

ग्रन्थ की भाषा सरल, सुबोध एवं रोचक है । छपाई, गैटअप, कागज उत्तम है ।

प्रकाशक एवं प्राप्ति स्थान :-

झेन पब्लिकेशन्स, 60, जुहू सुप्रीम सेन्टर, गुलमोहर क्रॉस रोड नम्बर 9, जे.वी.पी.डी. योजना, जुहू, मुंबई-400049 । • दूरभाष : +91 9022208074 • ई-मेल : info@zenpublications.com

ईशनिंदा का ठेकेदार बना पाकिस्तान (पृष्ठ ५ का शेष)

'शमा' को प्रपोज [illegible] शमा ने मना कर दिया। बस फिर क्या थी शमा और उसके परिवार के खिलाफ झूठी खबर फैला दी गई कि वे कुरान के पन्नों को जला रहे हैं। इस खबर के फैलते ही मौलवियों ने मस्जिद से सजा का ऐलान कर दिया और इस ईसाई दंपति को जिंदा जला दिया गया।

इसलिए पाकिस्तान में हालात ऐसे हैं कि सिर पर टोपी रखकर लम्बी दाढ़ी लगाकर अगर आप सड़क किनारे खड़े होकर किसी पर भी शोर मचा दें कि इसने अल्लाह की बेइज्जती की या पैगम्बर का अपमान किया है तो मजहबी पागल भीड़ ना कुछ सुनेगी ना देखेगी बस उस इन्सान का तिया पांचा कर देगी। कारण जब किसी पर अपना वश ना चले और उसे रास्ते से हटाना हो तो मजहब सबसे बेहतरीन हथियार है। इसमें समाज से लेकर सरकार तक सब उनके साथ खड़े मिलते हैं। यदि कोई बीच में बोले तो उसे मजहब द्रोही काफिर कहकर ऐसी फटकार लगाओ कि उसकी अगली पीढ़ी सच के सामने खड़े होने का साहस ना कर सके।

और जहाँ ऐसा हो उसे देश नहीं बल्कि कबीला कहा जाना चाहिए क्योंकि कबीले में कोई भी किसी की हत्या कर सकता है, कोई किसी पर फरमान जारी कर सकता है। ना वहाँ मानवधिकार होते, ना वहाँ पर अदालत होती। मौलवी आज पाकिस्तान की सड़कों पर मजहब की ठेकेदारी की तख्तियाँ गले में लटकाए घूम रहे हैं। मजहब के नाम पर ये लोग निर्णय लेकर किसी के खून के प्यासे हो रहे हैं। ❑❑

* प्रदूषण का कोई सगा नहीं *

चारों ओर मांस भक्षण का जोर है
साथ में दारू का भी शोर है
पर्दे के पीछे चितचोर है
सब रिश्ते-नाते एक ओर हैं
बहाने खाने-पीने के घनघोर हैं
साक्षात् धरती के चुपाये ढोर हैं

"बुद्धम् शरणम् गच्छामि" की तो लीला ही कुछ और है?
प्राणीमात्र दया-करुणा के मोर हैं
फिर भी हिंसा हत्या का दौर है
जीवों का नहीं अब कहीं ठौर है
जायें तो जायें कहां ?
कोई तो बताये जरा !
चक्कर पे चक्कर आ रहे मुझे !!!
"ये कैसा भोर है ?"
जो
भिक्षा में भी तू रक्त से सराबोर है

उसकी तो गई ?
क्या रहेगी तेरी सदा?
वो तेरे हाथ में था !
तू भी किसी के हाथ में है?
मान मत मान कर्मफल बलवान ?

पाछे पछताये ऐसा कर्म मत कर !
मत-कर मत-कर मत-कर !!!
जो कर लिये ताला लगा !
ताली थाली दरिया में डाल?
खेल खत्मकर पातपात डालडाल

थोड़ी-सी छोटी-सी लव-सी बात
छिपी पड़ी इसमें ढेर-सी करामात

कर्ज लिया तो चुकाना ही पड़ेगा
देर करेगा चक्रवृद्धि ब्याज भी देगा

तू पागल हो गया क्या ?
हड्डी चबाके अपने मसूढ़ों के
खून को ही चूसकर मस्त है !
जो डाल कुएं के ऊपर बैठा तू !
काटे जा रहा उसे धड़ाधड़ अंध ?

दीदे खोल नजर उठा देख...
अबौद्ध बच्चे भी जानवर भी ?
तेरी मूर्खता पर...
डरे सहमे आश्चर्यचकित हैं
अब गया अब गया मरा मरा !!!
सब तेरा भला चाहते हैं !
"बस तू है कि मानता ही नहीं"

मान जा भाई मान जा !
इनके भाव की बात मान जा !
इंसानियत को बदनामी से बचा ?

मुमुक्षु राजेन्द्र समता वाणी...

आर. एन. आई. नं० १६३३०/६७
Post in Delhi R.M.S
०५-११/०६/२०२१
भार- ४० ग्राम

सितम्बर 2021

रजिस्टर्ड नं० DL (DG-11)/8029/2021-23
लाईसेन्स नं० यू (डी०एन०) १४४/२०२१-२३
Licenced to post without prepayment
Licence No. U (DN) 144/2021-23

पाठकों से निवेदन

१. अपने पत्रों में अपनी ग्राहक संख्या अवश्य ही लिखा करें, अन्यथा कार्यवाही सम्भव नहीं होगी।

२. १५ तारीख तक प्रतीक्षा करके ही दुबारा अंक मँगाएं, यदि अंक न पहुँचा हो।

३. यदि आप अपना पता बदलवायें तो यह ध्यान रखें कि बदले हुए पते पर अंक-प्रेषण एक माह बाद आरम्भ होगा।

४. अंक के रेपर पर अपना पता चैक कर लिया करें। यदि कोई त्रुटि हो, तो सूचना दे दिया करें।

५. जिन ग्राहकों का शुल्क समाप्त है, अविलम्ब भेजने की कृपा करें।

दिनेश कुमार शास्त्री
कार्यालय व्यवस्थापक
मो०-९६५०५२२७७८

ओ३म्

भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द, सुन्दर आकर्षक छपाई एवं (द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)

सत्य के प्रचारार्थ

सत्यार्थ प्रकाश

सत्य के प्रचारार्थ

• प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
• विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
• उपहार संस्करण	मुद्रित मूल्य 1100 रु.	प्रचारार्थ 750 रु.	
• स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30 8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट Ph. :011-43781191, 09650522778
427, मन्दिर वाली गली, खारी बावली, दिल्ली-6 E-mail : aspt.india@gmail.com

छपी पुस्तक/पत्रिका

श्री सेवा में.....
ग्राम.....
डा०.....
जिला.....

मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक धर्मपाल आर्य, स्वामित्व आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट, ४२७, गली मन्दिर वाली, नया बांस, खारी बावली, दिल्ली-११०००६ से प्रकाशित एवं तिलक प्रिंटिंग प्रेस, २०४६, बाजार सीता राम, दिल्ली-११०००६ से मुद्रित।